RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School
imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty
well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning
● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

आज की खबर आज ही
जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी
चेतना मंच

वर्ष : 27 अंक : 204 website:www.chetnamanch.com नोएडा, सोमवार, 14 जुलाई, 2025 Chetna Manch Chetna Manch मूल्य 2.00 रु. पेज: 8

कांवड यात्रा में विघ्न डालने वालों से सख्ती से निपटें : मुख्यमंत्री

सीएम ने तैयारियों को लेकर की हाईलेवल बैठक

लखनऊ (एजेंसी)। श्रावण मास में शिव भक्त कांवडियों की यात्रा शुरू हो गई है। सावन महीन के दौरान यूपी में कांवड़ यात्रा की तैयारियों और व्यवस्थाओं की समीक्षा के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को एक हाईलेवल बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि यह पवित्र यात्रा पूरी तरह शांतिपूर्ण, सुरक्षित और श्रद्धामय वातावरण में सम्पन्न हो, इसके लिए शासन-प्रशासन पूरी सजगता, संवेदनशीलता और सक्रियता से कार्य करे। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देशित किया कि यात्रा मार्गों पर साफ-सफाई, चिकित्सा, पेयजल, भोजनालय, विश्रामालय और शौचालयों की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। महिला श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए उन्होंने विशेष निर्देश दिए कि महिला कांवड़ियों की सुरक्षा और सुविधा के पुख्ता इंतजाम हों तथा महिला पुलिस बल की प्रभावी तैनाती की जाए।

हाईलेवल बैठक में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान कर वहां ड्रोन कैमरों और सीसीटीवी के माध्यम से 24×7 निगरानी की जाए। उन्होंने खुफिया तंत्र को पूरी सक्रियता से कार्य करने के निर्देश दिए, ताकि किसी भी प्रकार की घुसपैठ या अराजकता की कोशिश को समय रहते रोका जा सके।

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि कांवड़ यात्रा में विघ्न डालने वालों से सख्ती से निपटा जाए और उनके खिलाफ तत्काल कठोर कार्रवाई की जाए। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि यात्रा मार्गों पर पब्लिक एड्रेस सिस्टम के माध्यम से जरूरी सूचनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाए और शिव भजनों का प्रसारण सुनिश्चित हो, जिससे श्रद्धालु भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से जुड़ाव महसूस करें।

हेलिकॉप्टर से पुष्पवर्षा कराने की व्यवस्था शुरू

मुख्यमंत्री ने श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए प्रमुख अवसरों पर हेलिकॉप्टर से पुष्पवर्षा कराने की व्यवस्था करने को कहा। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी प्रमुख स्थलों पर चिकित्सा शिविर, प्राथमिक उपचार केंद्र और एम्बुलेंस सेवाएं पूरी तरह सक्रिय रहें, ताकि किसी भी आपात स्थिति से तत्काल निपटा जा सके। खाद्य पदार्थों की शुद्धता को लेकर मुख्यमंत्री ने खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन तथा स्थानीय प्रशासन को निर्देशित किया कि वे खानपान सामग्री की गुणवत्ता और शुद्धता की नियमित जांच सुनिश्चित करें।

योगी ने श्रद्धालुओं से की अपील

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी श्रद्धालुओं से अपील की कि वे कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धा, मर्यादा और अनुशासन का पालन करें। उन्होंने कहा कि सभी शिवभक्त पवित्र नदियों से जल लेकर भोलेनाथ का जलाभिषेक करें और इस दौरान प्रशासन से पूर्ण सहयोग बनाए रखें। राज्य सरकार श्रद्धालुओं की सेवा, सुविधा और सुरक्षा हेतु पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

सावन के पहले सोमवार को शिवालयों में उमड़ी भीड़

नोएडा (चेतना मंच)। श्रावण मास के पहले सोमवार पर आज नोएडा के शिवालयों पर रूद्राभिषेक व जलाभिषेक करने वालों का तांता देखा गया।

सेक्टर-12 कलारिया बाबा मंदिर, सेक्टर-2 स्थित लाल मंदिर, सेक्टर-19 स्थित सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर-22 स्थित शिव मंदिर, सेक्टर-44 स्थित सदर का प्राचीन शिव मंदिर, सेक्टर-104 में वोडा महादेव मंदिर, छलेरा सेक्टर-46 का मंदिर, बिसरख का शिव मंदिर, सेक्टर-56 लक्ष्मी नारायण मंदिर समेत सैकड़ों शिव मंदिरों में महिलाएं, पुरूष, बच्चे तथा वृद्ध सुबह से ही जलाभिषेक करते देखे गये। सभी मंदिरों में भीड़ को नियंत्रित करने क लिए पुलिस की जिप्सी तैनात रही। मंदिरों के बाहर फल, धतूरा, बेलपत्र, भांग आदि की दुकानों में भी काफी भीड़ रही। सुबह 5 बजे से शुरू हुआ जलाभिषेक व रूद्राभिषेक दोपहर तक चलता रहा।

मंदिर के आसपास कड़ी सुरक्षा

पुलिस कमिश्नर गौतमबुद्धनगर श्रीमती लक्ष्मी सिंह के निर्देशन में एवं डीसीपी नोएडा श्री यमुना प्रसाद व एडीसीपी नोएडा सुमित कुमार शुक्ला के पर्यवेक्षण में एसीपी-1 नोएडा प्रवीण कुमार सिंह द्वारा थाना सेक्टर-20 व थाना सेक्टर-39 क्षेत्र के अंतर्गत वोडा महादेव मंदिर सेक्टर-100, शनि मंदिर छलेरा व सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर-19, नोएडा में पुलिस बल के साथ सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गया। उनके द्वारा यातायात व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्थाओं को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। उन्होंने थाना प्रभारी को निर्देशित किया गया कि कांवड़ यात्रा को लेकर पीसीआर, पीआरवी वाहनों द्वारा लगातार पैट्रोलिंग की जाये व यातायात व्यवस्था को दुरूस्त रखा जाये।

दिल्ली के तीन स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी

ई-मेल से मिली धमकी जांच में नहीं मिला बम

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में एक बार फिर स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है। दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित नेवी स्कूल और द्वारका व प्रशांत विहार के CRPF पब्लिक स्कूल को सोमवार सुबह ईमेल के जरिए बम की धमकी मिली। इसके बाद स्कूलों में हड़कंप मच गया। इस घटना के बाद दिल्ली पुलिस ने तत्काल कार्रवाई शुरू कर दी और स्कूलों में बम निरोधक दस्ते (बम डिस्पोजल स्क्वॉड) और डॉग स्क्वॉड को तैनात किया गया। अभी तक की जांच में किसी भी स्कूल में कोई संदिग्ध सामान नहीं मिला है। **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

ऑटों में भरी थी सवारी पलटने से हुई युवक की मौत

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। अलग-अलग स्थानों पर हुई दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत के मामले में लापरवाह वाहन चालकों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। पुलिस आरोपी वाहन चालकों की तलाश कर रही है।

ग्राम सबली जनपद हापुड़ निवासी प्रवेश कुमार ने थाना बादलपुर में ऑटो चालक के खिलाफ लापरवाही से दुर्घटना कर मृत्यु करने का मामला दर्ज कराया है। दर्ज रिपोर्ट में प्रवेश कुमार ने बताया कि उनका भतीजा सचिन दुजाना गांव के पास बुलंदशहर रोड पर स्थित केआरबीएल लिमिटेड राइस मिल में काम करता था।

● बाइक सवार की जान लेने वाले ट्रक चालक पर एफआईआर

11 जुलाई की रात्रि को उसने लाल कुआं से कंपनी जाने के लिए ऑटो लिया था। ऑटो चालक ने क्षमता से अधिक सवारी ऑटो में बैठा ली। रास्ते में तेज गति में होने के कारण ऑटो असंतुलित होकर पलट गया। इस हादसे में सचिन पाल को गंभीर चोट आई और अन्य सवारियां घायल हो गई। उपचार के दौरान सचिन की मौत हो गई। पुलिस ने प्रवेश कुमार की शिकायत पर **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

नोएडा से दो छात्राएं लापता

नोएडा (चेतना मंच)। अलग-अलग स्थान से दो किशोरियों लापता हो गई। किशोरियों के परिजनों ने संबंधित थानों में मुकदमा दर्ज कराया है। पुराना हैबतपुर में रहने वाले मनोज (काल्पनिक नाम) ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उनकी (13 वर्षीय) बेटी 4 जुलाई की सुबह घर से बिना बताए चली गई उन्होंने अपनी बेटी की काफी तलाश की लेकिन कोई पता नहीं चला। पीड़ित नहीं अपनी बेटी के गायब होने में किसी पर भी कोई शक नहीं जताया है। वहीं थाना सूरजपुर क्षेत्र के **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

संजीव जीवा और मुख्तार गैंग का शूटर शाहरूख पठान मुठभेड़ में ढेर

मुजफ्फरनगर (एजेंसी)। मेरठ एसटीएफ यूनिट ने मुजफ्फरनगर के संजीव जीवा और मुख्तार अंसारी गैंग के शूटर को मुठभेड़ में मार गिराया है। मुठभेड़ में मारे गये शूटर ने बीते हफ्ते 302 के गवाह पर संभल में फायरिंग की थी। मारे गए शूटर पर एक दर्जन से ज्यादा मुकदमे दर्ज हैं। एसटीएफ ने मौके से तीन पिस्तौल बरामद की हैं जिनमें एक पिस्टल बरेटा एक पिस्टल इटली मार्क है, साथ ही 60 राउंड से ज्यादा कारतूस व एक ब्रेजा कार मौके से बरामद की गई है।

मेरठ एसटीएफ यूनिट ने संजीव जीवा और मुख्तार अंसारी गैंग के शूटर शाहरूख पठान को थाना छपार जनपद मुजफ्फरनगर में मुठभेड़ के बाद घायल अवस्था में गिरफ्तार किया। शाहरूख को उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

शाहरुख पठान पुत्र जरीफ निवासी खलापार जनपद मुजफ्फरनगर संजीव जीवा गैंग का शार्प शूटर था जिस पर हत्या और रंगदारी के आधा दर्जन से अधिक मुकदमे है । वर्ष 2015 में मुजफ्फरनगर रेलवे स्टेशन पर पुलिस कस्टडी में आसिफ जायदा नामक व्यक्ति की हत्या कर दी थी। गिरफ्तार होने के पश्चात जेल में रहने के दौरान संजीव जीवा और मुख्तार अंसारी के संपर्क में आ गया और संजीव जीवा के लिए काम करने लगा। कुछ दिन जेल में रहने के पश्चात **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

- थार कांड फिर आया चर्चा में-

दूसरे पक्ष ने कोर्ट के आदेश पर दर्ज कराई रिपोर्ट

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा के थाना सेक्टर-24 क्षेत्र में 2 जून 2025 को हुए थार कांड में एक युवक को थार गाड़ी से कुचलने का प्रयास किया गया था। यह कांड एक बार फिर चर्चा में आ गया है। दूसरे पक्ष द्वारा दर्ज कराई गई एफआईआर में आरोप लगाया है कि लड़की को फोन पर मैसेज करने को लेकर सारा बखेड़ा खड़ा हुआ था। एफआईआर में आशंका जताई गई है कि दूसरे पक्ष के दबंग उसकी तथा आकाश अवाना की जान ले सकते हैं।

लड़की को मैसेज करने पर हुआ था बखेड़ा

ग्राम खानपुर लोनी (गाजियाबाद) निवासी अमित खारी ने न्यायालय में दिए गए प्रार्थना पत्र में बताया कि 2 जून की सुबह आकाश अवाना के मोबाइल फोन पर अनजान नंबर से तीन कॉल आई जिसे उसने रिसीव नहीं किया। इसके बाद नवीन बैसला ने उक्त नंबर पर **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

पुलिस की गोली से गैंग का सरगना लंगड़ा

अंतर्राज्यीय गिरोह के तीन लुटेरे गिरफ्तार

नोएडा (चेतना मंच)। एनसीआर में लूट व चोरी की वारदात को सिलसिलेवार अंजाम देकर पुलिस के लिए सिरदर्द बने अंतर्राज्यीय गिरोह के तीन लुटेरों को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है। थाना फेस 1 पुलिस की गोली लगने से गिरोह का सरगना लंगड़ा हो गया।

एडीसीपी सुमित शुक्ला ने बताया कि थाना फेस वन प्रभारी अमित कुमार पुलिस टीम के साथ सेक्टर 14 ए पुल के नीचे वाहनों की चेकिंग कर रहे थे। इस दौरान बाइक पर आ रहे तीन युवकों को पुलिस टीम ने रोकने का इशारा किया। पुलिस को देखकर बाइक सवार सेक्टर-14 गंदे नाले की पटरी की तरफ भागने लगे। पुलिस टीम ने बदमाशों का पीछा शुरू किया। इस दौरान हड़बड़ाहट में

बदमाशों की बाइक स्लिप होकर गिर गई। खुद को घिरा देखकर बदमाशों ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में एक बदमाश घायल हो गया जबकि उसके दो साथी पुलिस को चकमा देकर भाग निकले।

एडीसीपी ने बताया कि पकड़े गए बदमाश की पहचान नीरज उर्फ अय्या पुत्र लेखराज निवासी शशि गार्डन थाना फेस 2 दिल्ली के रूप में हुई। उसके पास से तमंचा कारतूस स्नैचिंग किए गए तीन मोबाइल फोन व चोरी की बाइक बरामद हुई। नीरज उर्फ अय्या ने बताया कि उसने यह बाइक 10 जुलाई को सेक्टर-16 की कार मार्केट से चोरी की थी। घायल **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

आज से अंतिम निवास में गूंजेगा महामृत्युंजय मंत्र का जाप!

- **आज से अंतिम निवास में गूंजेगा महामृत्युंजय मंत्र का जाप!**
- **चित्रकूट के प्रकांड पंडित करेंगे जाप**
- **हर सवा लाख के बाद होगा उद्यापन**
- **कोई भी उठा सकेगा महामृत्युंजय जाप का लाभ**

अरुण सिन्हा

नोएडा। ऊँर्त्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात॥

लोगों को गंभीर रोगों तथा अकाल मौत से बचाने का जीवनदायिनी शंकर भगवान का महामृत्युंजय मंत्र का जाप अब नोएडा के अंतिम निवास (श्मशान घाट) में भी अनवरत गूंजेगा।

नोएडा के निवासियों को निरोग रखने तथा रोग व अकाल मौत से बचाने की कामना को लेकर सेक्टर-94 स्थित अंतिम निवास पर महामृत्युंजय जाप शुरू होगा। यह जाप रोजाना सालों-साल अनवरत चलता रहेगा।

अंतिम निवास को रमणीक व अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करने में दशकों से जुटी संस्था नोएडा लोक मंच ने आज से अब महामृत्युंजय जाप शुरू करने की तैयारी की है।

नोएडा लोकमंच के महासचिव महेश सक्सेना ने बताया कि आज अंतिम निवास परिसर में शिव शंकर कृपा निवास का शुभारंभ किया जा रहा है। जहां पर रोजाना चित्रकूट के प्रकाण्ड पंडितों के द्वारा सुबह 6-9 बजे तथा शाम को 6-8 बजे तक महामृत्युंजय जाप किया जाएगा। इस बीच की अवधि के दौरान स्पीकर के जरिए लगातार महामृत्युंजय मंत्र की ध्वनि बजती रहेगी। उन्होंने बताया कि रोजाना करीब 4-5 माला इस मंत्र का जाप होगा। इस तरह 60 दिनों यानी करीब दो माह में सवा लाख

महामृत्युंजय का जाप होगा। सवा लाख मंत्र का जाप पूरा होने पर उद्यापन किया जाएगा। यह प्रक्रिया अनवरत रहेगी।

श्री सक्सेना ने बताया कि यदि किसी के घर में कोई व्यक्ति गंभीर बीमारी से पीड़ित है तथा वह महामृत्युंजय जाप कराना चाहता है। तो वह पीड़ित व्यक्ति की फोटो तथा उसका विवरण लेकर अंतिम निवास आ जाए। उनका भी प्रकांड पंडितों द्वारा महामृत्युंजय जाप करा दिया जाएगा ताकि वे स्वस्थ्य हो सकें तथा अकाल मौत आदि से उबर सकें। यह कार्य आमजन हिताय व मानवता के निहितार्थ किया जा रहा है।

शहर के गणमान्य लोगों ने इस पहल की काफी सराहना की तथा कहा कि सेक्टर-94 का अंतिम निवास शायद देश का पहला श्मशान होगा जहां पर **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

निर्मम हत्या

हरियाणा से आई दो निर्मम हत्याओं की घटनाओं ने हर किसी संवेदनशील इंसान को झकझोरा है। गुरुपूर्णिमा के दिन दो शिष्यों ने नारनौंद में एक गुरु को चाकुओं से गोद दिया। वहीं गुरुग्राम में किसी बात पर आगबबूला पिता ने नाजों से पाली बेटी की गोली मारकर हत्या कर दी। यूं तो ये घटनाएं करोड़ों लोगों में उंगली पर गिनी जानी वाली हैं, लेकिन इन घटनाओं में रिश्तों और आत्मीय अहसासों का कत्ल हुआ, इसलिये हर कोई विचलित हुआ। इन हृदयविदारक घटनाओं ने हर किसी को उद्वेलित किया कि आखिर हम कैसा समाज रच रहे हैं? क्यों हम जरा-जरा सी बात पर अपनों व समाज में अब तक आदरणीय स्थान रखने वाले के खिलाफ ऐसी क्रूरता दिखाने लगे हैं। यूं तो हर रोज समाचारों में ऐसी खबरें तैरती रहती हैं, जिसमें हम विश्वास व रिश्तों का कत्ल होते देखते हैं। राह चलते मामूली विवाद में हत्याएं हो जाती हैं। सड़क पर एक कार का दूसरी से स्पर्श हो जाए या पार्किंग विवाद हो, लोग जान लेने पर उतारू हो जाते हैं। लेकिन हरियाणा की दोनों घटनाएं अलग किस्म की हैं। अक्सर हम नई पीढ़ी के आक्रामक व्यवहार की बात करते हैं लेकिन गुरुग्राम में तो पिता ने अपनी पुत्री की हत्या कर दी। कतिपय समाचारपत्रों में गुरुग्राम में राज्य स्तरीय टेनिस खिलाड़ी की हत्या की वजह उसके रील बनाने का जुनून बताया गया, तो दूसरे पत्रों में बेटी द्वारा टेनिस अकादमी खोलने से पिता का नाराज होना। लेकिन ठंडे दिमाग से सोचें तो ये कोई ऐसी वजह नजर नहीं है कि पिता अपने ही जिगर के टुकड़े को गोली मार दे। जाहिर है विवाद व टकराव की लंबी पृष्ठभूमि होगी। नए दौर के बच्चे अति आत्मविश्वास से भरे हैं। उनमें उत्साह है, उमंग है तो बहुत कुछ करने का जज्बा भी है। उनके सपने बड़े हैं तो सोचने-समझने के तौर-तरीके भी जुदा हैं। वहीं पुरानी पीढ़ी के संघर्ष से व सीमित संसाधनों में पले-पढ़े लोग नई व अपने से पहले की पीढ़ी के बीच तेजी से बदलते परिवेश से सामंजस्य नहीं बैठा पा रहे हैं। निश्चित रूप से विकास की तीव्र गति के बीच हमारे जीवन में बहुत कुछ तेजी से बदला है। पुरानी पीढ़ी इस संक्रमणकाल से सामंजस्य स्थापित करने में सहज महसूस नहीं कर पा रही है। नई पीढ़ी की स्वच्छंदता और अपने बड़े फैसले खुद लेने की प्रवृत्ति पुरानी पीढ़ी को रास नहीं आ रही है। जिसका प्रतिकार वे हिंसक तरीके से करने लगे हैं। वहीं नारनौंद की घटना हमें आक्रामक होते किशोरों की हकीकत पर विचार करने को बाध्य करती है। दो छात्रों ने प्रिंसिपल की हत्या किस वजह से की, उसकी हकीकत की असली तस्वीर जांच के बाद ही सामने आएगी, लेकिन बात कोई भी हो किसी छात्र द्वारा गुरु की हत्या करने की वजह नहीं हो सकती। कहा जा रहा है कि प्रिंसिपल सख्त और बेहद अनुशासनप्रिय थे। लेकिन ये वजह किसी शिक्षक की हत्या को तार्किकता नहीं दे सकती। हत्या छात्र की हो या शिक्षक की, दोनों ही घटनाएं दुर्भाग्यपूर्ण हैं। एक दौर था कि अभिभावक खुद ही शिक्षक से कहा करते थे कि उनके पाल्य को कड़े अनुशासन में शिक्षा दीजिए। तब शिक्षक भी सख्ती करने से पीछे नहीं हटते थे। पढ़ाई ठीक से न करने और अनुशासन तोड़ने पर छात्रों की पिटाई आम बात हुआ करती थी। इस पर अभिभावक भी कोई बड़ी प्रतिक्रिया नहीं देते थे। लेकिन लगता है कि नई पीढ़ी के विद्यार्थी किसी भी सख्ती को बर्दाश्त करने को तैयार नहीं हैं। दरअसल, हमारे समाज में जिस आक्रामकता का विस्तार हुआ है, वह अब नई पीढ़ी के बच्चों में नजर आने लगी है। उनके अहम को जल्दी ठेस लग जाती है। वे कक्षा में किसी तरह की सख्ती, उलाहना और नसीहत सहने को तैयार नहीं हैं। इस पर जरा-सी ठेस लगने पर वे आक्रामक हो जाते हैं। अक्सर कई स्कूलों में छोटी-छोटी बात से ठेस लगने पर छात्रों की आत्महत्या की खबरें आती हैं। हमारे समाज विज्ञानियों को भी इन घटनाओं के आलोक में बदलते परिवेश में किशोरों की आक्रामकता के कारणों का मंथन करना होगा।

आतंकवाद में डिजिटल तकनीकों का बढ़ता उपयोग चिन्ताजनक

टेरर फंडिंग पर नजर रखने वाली वैश्विक संस्था वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (एफएटीएफ) की नई रिपोर्ट में आतंकवादी गतिविधियों में डिजिटल तकनीकों के बढ़ते उपयोग पर चिंता जताई गई है। इस रिपोर्ट ने वैश्विक सुरक्षा के समक्ष एक नई और गहन चुनौती की ओर संकेत करते हुए आतंकवादी गतिविधियों में डिजिटल तकनीकों के बढ़ते प्रयोग को गहन चिन्ताजनक बताया है। रिपोर्ट में ई-कॉमर्स, ऑनलाइन भुगतान, सोशल मीडिया, क्रिप्टोकरेंसी और डार्कनेट जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से आतंकवादी गतिविधियों के वित्तपोषण और संचालन के बढ़ते खतरे पर न केवल प्रकाश डाला गया है बल्कि गंभीर चिंता जताई गई है। रिपोर्ट ने आतंकवाद के एक अलग ही पहलू की ओर ध्यान खींचा है। इसमें बताया गया है कि टेक्नोलॉजी तक आतंकी संगठनों की आसान पहुंच उन्हें और खतरनाक बना रही है। इससे निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर नई रणनीति एवं नियंत्रण नीति की जरूरत है। विशेष रूप से पाकिस्तान जैसे देशों में पलने-बढ़ने वाले आतंकी संगठन इन तकनीकों का उपयोग कर न केवल फंडिंग जुटा रहे हैं, बल्कि गोपनीयता और पहुँच के नए मार्ग भी तलाश रहे हैं। इसके अलावा, आतंकवादी संगठन अब विकेंद्रीकृत मॉडल की ओर बढ़ रहे हैं, जैसेकि अल-कायदा क्षेत्रीय इकाइयों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर धन जुटाना और संचालन करना। भारत ने समय-समय पर पाकिस्तान पोषित एवं पल्लवित आतंकवाद को बेनकाब करते हुए दुनिया से मिल रहे आर्थिक सहयोग पर चिन्ता जताई और कठोर कार्रवाई की मांग की, इस रिपोर्ट को भारत के रुख का समर्थन करने वाले एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

एफएटीएफ के मुताबिक, 2019 में पुलवामा और 2022 में गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में हुए आतंकी हमलों के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया गया। पुलवामा में आतंकियों ने आईईडी का इस्तेमाल किया था और इसे बनाने के लिए एल्युमिनियम पाउडर एमेजन से खरीदा गया था। गोरखपुर में हुए हमले में पैसों के लेनदेन में ऑनलाइन जरिया अपनाया गया। गोरखपुर वाले केस में आतंकी विचारधारा से प्रभावित शख्स ने इंटरनैशनल थर्ड पार्टी ट्रांजैक्शन और वीपीएन सर्विस का उपयोग किया था। इस तरह से उसने आईएसआईएल के समर्थन में विदेश में धन भेजा था और उसे भी बाहर से आर्थिक मदद मिली थी। वीपीएन एक डिजिटल तकनीक है जो इंटरनेट उपयोगकर्ता की लोकेशन और पहचान को छुपाती है। जब कोई व्यक्ति वीपीएन का उपयोग करता है, तो उसका इंटरनेट ट्रैफिक एक एन्क्रिप्टेड सुरंग के माध्यम से किसी अन्य देश के सर्वर से होकर गुजरता है। इससे उसकी वास्तविक पहचान छिप जाती है और वह सेंसरशिप, ट्रैकिंग और जियो-रिस्ट्रिक्शन से बच सकता है।

2024 तक दुनिया में 150 करोड़ से अधिक वीपीएन यूज़र्स हैं। इनमें से बड़ी संख्या एशिया और मध्य पूर्व से है, जहां सेंसरशिप या निगरानी से बचने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। भारत में 12 से 14 करोड़ वीपीएन उपयोगकर्ता हैं। भारत वीपीएन यूज़र्स की संख्या में दुनिया के शीर्ष 3 देशों में शामिल है। वीपीएन का उपयोग कर आतंकी सोशल मीडिया और गुप्त चैनलों के ज़रिए युवाओं को बरगलाने और भर्ती करने का काम करते हैं। कुछ आतंकवादी समूह वीपीएन नेटवर्क का प्रयोग कर सरकारी वेबसाइटों, रक्षा प्रतिष्ठानों और बैंकिंग सिस्टम पर साइबर हमला करते हैं। दुनिया की एक तिहाई आबादी ऑनलाइन शॉपिंग करती है। इस साल ग्लोबल ई-कॉमर्स मार्केट के 7 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाने की उम्मीद है। भारत इस लिस्ट में फिलहाल सातवें नंबर पर है। लेकिन सवाल यह है कि इस डेटा के बीच अगर कुछ संदिग्ध लोग कुछ हजार डॉलर की खरीददारी करते हैं, जिसका इस्तेमाल आगे जाकर किसी आतंकी हमले में होता है, तो उसे चिह्नित कैसे किया जाए? एफएटीएफ ने कुछ दिनों पहले पहलगाम को लेकर कहा था कि इतना बड़ा आतंकी हमला बाहरी आर्थिक मदद के बिना संभव नहीं हो सकता। उसकी हालिया रिपोर्ट इसी बात को और पुष्ट कर देती है। आतंकियों ने अपने काम का तरीका बदल लिया है। वे इंटरनेट की दुनिया की ओट ले रहे हैं, जो ज्यादा खतरनाक है।

एफएटीएफ की रिपोर्ट में कहा गया है कि आतंकवादी समूहों ने अब पारंपरिक धन स्रोतों के साथ-साथ क्रिप्टोकरेंसी जैसे डिजिटल वित्तीय माध्यमों का भी उपयोग करना शुरू कर दिया है। ये माध्यम उन्हें सरकार की नजरों से बचाते हुए सीमाओं के पार फंडिंग जुटाने की सहूलियत देते हैं। साथ ही, एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग ऐप्स, फेक सोशल मीडिया अकाउंट्स, और ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म्स का इस्तेमाल कर वे अपने नेटवर्क का विस्तार कर रहे हैं। पाकिस्तान एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट से बाहर भले हो गया हो, लेकिन उसके खिलाफ लगे आरोपों में कोई कमी नहीं आई है। अनेक ग्लोबल इंटेलिजेंस रिपोर्ट्स और एफएटीएफ ऑब्ज़र्वेशन्स इस बात की पुष्टि करती हैं कि पाकिस्तान में आतंकी गुटों को डिजिटल इकोसिस्टम का खुले तौर पर उपयोग करने दिया जा रहा है, या कभी-कभी सरकार की मौन सहमति से। उदाहरण के रूप में लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे संगठनों ने बिटकॉइन और अन्य डिजिटल टोकन के जरिए फंड जुटाने की नई तरकीबें अपनाई हैं। कई मामलों में आतंकी फंडिंग के लिए फर्जी चैरिटेबल ट्रस्ट और सामाजिक मीडिया अभियानों का सहारा लिया गया है। 'ग़ज़वा-ए-हिंद' जैसे डिजिटल प्रोपेगेंडा प्लेटफॉर्म्स पाकिस्तानी ज़मीन से संचालित होकर भारत में कट्टरपंथ को बढ़ावा देने में लगे हैं।

भारत के विरुद्ध हाइब्रिड वारफेयर और साइबर जिहाद की रणनीति पाकिस्तान समर्थित आतंकी संगठनों की नीति का हिस्सा बन चुकी है। एफएटीएफ की रिपोर्ट में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि दक्षिण एशिया में भारत सबसे अधिक प्रभावित देश है, जहां डिजिटल माध्यम से न केवल फंडिंग, बल्कि ब्रेनवॉशिंग और भर्ती का कार्य भी तेजी से हो रहा है। जम्मू-कश्मीर में सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं को आतंकी संगठनों की ओर आकर्षित किया जाता है। उत्तर पूर्व में उग्रवादी संगठनों को डिजिटल भुगतान और चैनलों के माध्यम से सहायता मिलती रही है। एफएटीएफ ने पाकिस्तान समेत उन सभी देशों से अपेक्षा की है कि वे डिजिटल वित्तीय निगरानी तंत्र को मजबूत करें। क्रिप्टो ट्रांजैक्शन पर नियमित रिपोर्टिंग सुनिश्चित करें। आतंकी संगठनों के ऑनलाइन अस्तित्व को समाप्त करने के लिए तकनीकी टूल्स विकसित करें। एफएटीएफ का चेतावनी के स्वरों में यह भी कहना है कि यदि आतंक के गढ़ एवं आतंकवाद को पोषित करने वाले इन देशों ने इन सिफारिशों पर अमल नहीं किया तो उन्हें 'हाई रिस्क जॉन' की सूची में डाला जा सकता है। भारत को इस डिजिटल आतंकी खतरे से निपटने के लिए सभी सुरक्षा एजेंसियों के समन्वय से एक संयुक्त रणनीति बनानी चाहिए-क्रिप्टो ट्रांजैक्शन की रियल-टाइम निगरानी, साइबर आतंकवाद पर विशेष फोर्स का गठन, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से आतंकी कंटेंट की पहचान और हटाने के लिए मजबूत कानून, डार्क वेब और फेक डोनेशन चैनलों की सतत निगरानी आदि कदम उठाने चाहिए।

डिजिटल तकनीक ने जहां मानव जीवन को सरल और तेज़ किया है, वहीं इसका दुरुपयोग करके आतंकवाद को नया चेहरा देने की कोशिशें चिंता का विषय हैं। एफएटीएफ की चेतावनी को गंभीरता से लेने और वैश्विक सहयोग को मजबूत करने की जरूरत है। विशेष रूप से पाकिस्तान जैसे देशों पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाना होगा ताकि वे अपनी धरती पर पनप रहे आतंकवाद एवं डिजिटल आतंकवाद के अड्डों को समाप्त करें। तभी एक सुरक्षित डिजिटल विश्व और शांतिपूर्ण वैश्विक समाज की कल्पना की जा सकती है। एफएटीएफ रिपोर्ट विश्लेषण करती है कि आतंकवादियों ने अपने आतंकवादी उद्देश्यों के लिए वैश्विक दर्शकों से धन जुटाने के लिए सोशल मीडिया पर धन उगाहने वाले प्लेटफॉर्म और क्राउडफंडिंग माध्यमों से आतंकवाद के वित्तपोषण प्राप्त किया है। आतंकवादी संगठन पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ डिजिटल तरीकों से भी धन जुटाकर आतंकवाद को अंजाम दे रहे हैं।

भारत ने एफएटीएफ रिपोर्ट को अपने रुख के समर्थन में एक महत्वपूर्ण कदम बताया है, जिसमें पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठनों पर कार्रवाई की मांग की गई है। यह रिपोर्ट आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और समन्वय की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। यह रिपोर्ट आतंकवाद के वित्तपोषण और संचालन में शामिल देशों और व्यक्तियों पर दबाव बढ़ाने और आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए नीतियों और रणनीतियों को विकसित करने में सहायक हो सकती है।

- ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था कि कश्यप और अदिति ने बड़ा भारी तप किया था। मैं पहले ही उनको वर दे चुका हूँ। वे ही दशरथ और कौसल्या के रूप में मनुष्यों के राजा होकर श्री अयोध्यापुरी में प्रकट हुए हैं॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई। रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई॥
नारद बचन सत्य सब करिहउँ। परम सक्ति समेत अवतरिहउँ॥

उन्हीं के घर जाकर मैं रघुकुल में श्रेष्ठ चार भाइयों के रूप में अवतार लूँगा। नारद के सब वचन मैं सत्य करूँगा और अपनी पराशक्ति के सहित अवतार लूँगा॥

हरिहउँ सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई॥
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना। तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना॥

मैं पृथ्वी का सब भार हर लूँगा। हे देववृंद! तुम निर्भय हो जाओ। आकाश में ब्रह्म (भगवान) की वाणी को कान से सुनकर देवता तुरंत लौट गए। उनका हृदय शीतल हो गया॥

तब ब्रह्माँ धरनिहि समुझावा। अभय भई भरोस जियँ आवा॥

तब ब्रह्माजी ने पृथ्वी को समझाया। वह भी निर्भय हुई और उसके जी में भरोसा (ढाढस) आ गया॥

दो0-निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ।
बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ॥

देवताओं को यही सिखाकर कि वानरों का शरीर धर-धरकर तुम लोग पृथ्वी पर जाकर भगवान के चरणों की सेवा करो, ब्रह्माजी अपने लोक को चले गए॥

(क्रमशः...)

सत्ता की खातिर हिंदी विरोध की राजनीति

देश में गरीबी, भुखमरी, रोजगार और बुनियादी सुविधाएं तथा चहुंमुखी विकास जैसे मुद्दों पर राजनीति करने के बजाय धर्म, जाति, संप्रदाय और भाषा के आधार पर सत्ता पाने के सस्ते प्रयासों को देश के मतदाताओं ने कई बार नकार दिया है। चूंकि देशहित और विकास से जुड़े मुद्दों पर राजनीति करने के लिए समझ और योजना चाहिए, इसके विपरीत भावनात्मक मुद्दे को कुरेद कर समाज को बांटने में जोर नहीं पड़ता, इसलिए नेताओं का प्रयास यही रहता है कि सत्ता की खातिर ऐसे मुद्दों को भुनाया जाए। महाराष्ट्र में हिंदी को मुद्दा बना कर ऐसे ही प्रयास किए गए हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अंग्रेजी को पूरे अमरीका में अनिवार्य किया है। इस आदेश में कहा गया कि राष्ट्रीय स्तर पर निर्दिष्ट भाषा एकीकृत और सामंजस्यपूर्ण समाज का मूल है। इससे संयुक्त राज्य अमरीका ऐसे नागरिकों से मजबूत होता है जो एक साझा भाषा में विचारों का स्वतंत्र रूप से आदान-प्रदान कर सकते हैं। इसके विपरीत हिंदी को लेकर महाराष्ट्र में शिवसेना के दोनों गुट राजनीति चमकाने में जुटे हुए हैं। इसके लिए उन्हें हिंसा से भी परहेज नहीं है। केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार का प्रयास है कि अमरीका में अंग्रेजी की तरह भारत में भी एक ऐसी भाषा होनी चाहिए, जिसे देश की एक सर्वमान्य भाषा बनाया जा सके। इसी प्रयास के तहत मौजूदा शिक्षा प्रणाली में हिंदी को अनिवार्य किया गया है।

महाराष्ट्र में भाजपा से सत्ता हासिल करने के लिए शिव सेना के दोनों गुटों ने हिंदी विरोध को हथियार बना लिया है। महाराष्ट्र में ठाकरे बंधुओं यानी उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे का लगभग 20 साल बाद ऐतिहासिक पुनर्मिलन हुआ। उद्धव और राज ठाकरे, जो 2005 में मालवन विधानसभा उपचुनाव के बाद से एक साथ मंच पर नहीं दिखे, उन्होंने मराठी भाषा और अस्मिता के लिए एकजुट होकर भाजपा नीत महायुति सरकार पर जमकर निशाना साधा। उद्धव ठाकरे ने कहा कि हम एक साथ आए हैं और अब एक साथ रहेंगे। राज ठाकरे ने सरकार पर मुंबई को महाराष्ट्र से अलग करने की कोशिश का भी आरोप लगाया और मराठी अस्मिता को कमजोर करने की साजिश का भी जिक्र किया तथा यह तक कह दिया कि यदि कोई मराठी का विरोध करे तो कान के नीचे बजा दो। यानी थप्पड़ वाली राजनीति महाराष्ट्र में एक बार फिर से जोर पकड़ सकती है। यह रैली मूल रूप से 16 अप्रैल 2025 को जारी सरकारी आदेश (जीआर) के खिलाफ विरोध के रूप में प्रस्तावित थी, जिसमें हिंदी को कक्षा 1 से 5 तक अनिवार्य तीसरी भाषा बनाया गया था। मराठी संगठनों और विपक्षी दलों, विशेष रूप से शिवसेना (यूबीटी) और एमएनएस के तीव्र विरोध के बाद, सरकार ने 29 जून को दोनों जीआर (मूल और संशोधित) वापस ले लिए। इस जीत को मराठी एकता का प्रतीक बताते हुए दोनों भाइयों ने रैली को 'विजय मेलावा' में बदल दिया। रैली के दौरान राज ठाकरे की पार्टी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के कुछ कार्यकर्ताओं ने एक गुजराती दुकानदार की पिटाई कर दी। इस घटना के खिलाफ गुजराती और मारवाड़ी दुकानदारों ने जोरदार प्रदर्शन किया। लोग मराठी भाषा को जबरदस्ती थोपने के नाम पर हो रही गुंडागर्दी के खिलाफ थे। मनसे का जवाबी प्रदर्शन अपने कार्यकर्ताओं की गुंडागर्दी के खिलाफ हुए इस प्रदर्शन से मनसे के कार्यकर्ता भड़क गए और उन्होंने मीरा रोड पर जबरदस्त हंगामा किया। इस हंगामे का मकसद हिंदी भाषियों पर मराठी बोलने का दबाव बनाना था। मनसे ने इस प्रदर्शन को लेकर कोई अनुमति नहीं ली थी। इस वजह से महाराष्ट्र पुलिस ने प्रदर्शन करने वाले कार्यकर्ताओं को हिरासत में भी लिया। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने मराठी विवाद के समर्थक नेताओं को यूपी-बिहार में पटक-पटक कर पीटने की चेतावनी दी, तो वहीं इसके जवाब में उद्धव ठाकरे ने इस तरह के बयान देने वालों को लकड़बग्घा कहा।

महाराष्ट्र में मराठी बनाम हिंदी भाषी की यह लड़ाई नई नहीं है। यह समय-समय पर राजनीतिक जरूरत के हिसाब से सडक़ पर उतरती रही है। मराठी बनाम हिंदी की हालिया जंग, ठाकरे बंधुओं की गठजोड़ की देन है। बाला साहेब ठाकरे की राजनीति महाराष्ट्र की राजनीति हमेशा से ही मराठी मानुष बनाम बाहरी के बीच घूमती रही है। शिवसेना के संस्थापक बाला साहेब ठाकरे की शुरुआती राजनीति भी क्षेत्रवाद से प्रेरित थी। उन्होंने मराठी बनाम गैर मराठी के मुद्दे से ही अपनी राजनीति शुरू की थी। बाला साहेब ठाकरे का मुख्य एजेंडा हिंदुत्व था, लेकिन वह महाराष्ट्र पर पहला हक मराठी मानुष का ही मानते थे। राज ठाकरे की राजनीति और मनसे का गठन 2005 में बाला साहेब ठाकरे के भतीजे राज ठाकरे ने क्षेत्रवाद के एजेंडे पर ही टिके रहने में अपनी भलाई समझी और अगले साल एक नई पार्टी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना बना ली। इस पार्टी का एजेंडा स्पष्ट था- दूसरे प्रदेशों से आने वाले लोगों का विरोध करना। राज ठाकरे की पार्टी मनसे शुरू से ही उत्तर प्रदेश और बिहार से आने वाले मजदूरों के खिलाफ रही है। वह दूसरे प्रदेशों से आने वाले लोगों को मराठियों के लिए खतरा बताती रही है। विधानसभा और लोकसभा में गिरता जनाधार पिछले कुछ चुनावों के नतीजे बताते हैं कि उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे की पार्टियों का जनाधार गिरा है। विधानसभा और लोकसभा चुनावों में लगातार गिरती सीटों की संख्या इसकी पुष्टि करती है। चुनाव और भाषा की राजनीति मुंबई में होने वाले बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) चुनाव को दोनों नेताओं की तीसरी बड़ी परीक्षा माना जा रहा है। बीएमसी भारत का सबसे अमीर नगर निगम है और इसी वजह से मराठी बनाम हिंदी की राजनीति को बीएमसी चुनाव से जोडक़र देखा जा रहा है। शिवसेना के खिलाफ राजनीतिक मोर्चा खोलते हुए महाराष्ट्र सरकार ने पहले ही मराठी को अनिवार्य करने और 3 अक्टूबर को मराठी दिवस मनाने का ऐलान कर दिया। इस दिशा में और ठोस कदम, जैसे मराठी साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम घोषित किए गए हैं। जिस तरह महाराष्ट्र में दोनों शिवसेना मराठी मानुष सबसे पहले की राजनीति कर रही हैं, उसी तर्ज पर यदि देश के अन्य राज्यों में भी इसी तरह की राजनीति होने लगे तो कल्पना की जा सकती है कि देश की एकता-अखंडता का क्या हाल होगा। पूरा देश विवादाग्रस्त हो जाएगा।

-योगेंद्र योगी, स्वतंत्र लेखक

राशिफल

श्रावण माह, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी | **(विक्रम संवत् 2082)**

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
आय में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। यात्रा कष्टप्रद हो सकती है और मन परेशान करने वाले समाचार की प्राप्ति हो सकती है।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
कोर्ट-कचहरी से बचें। व्यावसायिक उथल-पुथल बनी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम। सीने में विकार संभव है।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
भयग्रस्त माहौल रहेगा। अपमानित होने का भय रहेगा। यात्रा अभी रोक दें। स्वास्थ्य ठीक-ठाक।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
किसी भी तरीके के रिस्क लेने लायक नहीं हैं। वाहन धीरे चलाएं। स्वास्थ्य पर बहुत ज्यादा ध्यान रखें।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
स्वंय के स्वास्थ्य पर और जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर ध्यान दें और साथ पर ध्यान दें। नौकरी-चाकरी खराब स्थिति में है।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
शत्रुओं पर दबदबा कायम रहेगा, लेकिन बहुत डिस्टर्बेंस बनी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम है। पैरों में चोट-चपेट लग सकती है।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
बच्चों की सेहत पर ध्यान दें। प्रेम में कोई बड़ा झगड़ा या बड़ी परेशानी हो सकती है। महत्वपूर्ण निर्णय बिल्कुल भी न लें।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
घरेलू तनाव या झगड़ा, झंझट बढ़कर बाहर न जाने पाए इस बात का ध्यान रखिएगा। रक्तचाप परेशानी में दिख रहा है।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ठा, भे)
व्यवसाय में प्रॉब्लम है। स्वंय के स्वास्थ्य नाक, कान, गला की परेशानी हो सकती है।

मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)
भाग्य साथ देगा। रोजी रोजगार में तरक्की करेंगे। यात्रा का योग बनेगा। धर्म-कर्म में हिस्सा लेंगे।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, षो, द)
धन हानि के संकेत हैं। जुआ, सट्टा, लॉटरी में पैसा न लगाएं। कई निवेश न करें। मुख रोग के शिकार हो सकते हैं।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)
पार्टनरशिप में कोई बड़ी परेशानी हो सकती है। सर दर्द, नेत्र पीड़ा बनी रहेगी। प्रेम, संतान मध्यम। व्यापार मध्यम।

सीईओ के निर्देश पर लगाये गये कचनार के पेड़

पौधों का रखरखाव नितांत जरूरी : पी.पी. मिश्रा

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी रवि कुमार एन जी के निर्देश पर अमृतपुरम गोल चक्कर से लेकर रामपुर गोल चक्कर तक प्राधिकरण अधिकारियों ने कचनार के पेड़ लगवा दिये। बताया गया कि 2021 में अमृतपुरम गोल चक्कर से रामपुर गोल चक्कर तक कचनार के पेड़ लगाए गए थे, लेकिन वे रखरखाव के अभाव में सूख गए थे।

सामाजिक कार्यकर्ता हरेंद्र भाटी की शिकायत पर मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने तत्काल पौधे लगाने का निर्देश जारी किया और प्राधिकरण के अधिकारी मौके पर पहुंचकर पौधारोपण कार्यक्रम संपन्न करवाया।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी रवि कुमार एनजी शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हैं। यही नहीं, कोई भी समस्या हो, उसका निस्तारण तत्काल उनके द्वारा किया जाता है।

वहीं, ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की एसीईओ बी. लक्ष्मी शिकायतों के निस्तारण पर हमेशा जोर देती रहती हैं। एसीईओ बी. लक्ष्मी ने भी कचनार के पेड़ की शिकायत को गंभीरता से लिया था।

उद्यान विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक पी.पी. मिश्रा ने बताया कि कचनार के पेड़ पूरी तरह से लगा दिए गए हैं, अब उनके रखरखाव पर भी ध्यान दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पेड़ों का रखरखाव और देखभाल बहुत जरूरी है। जैसे हम अपने बच्चों की देखभाल करते हैं, उसी तरह यदि पौधा लगाया जाए तो उसका भी रखरखाव करना आवश्यक है।

श्री कृष्णा सोसाइटी में लगा फिजियोथेरेपी ऑक्यूपेशनल थेरेपी शिविर संपन्न

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर 117 स्थित श्री कृष्णा सोसाइटी में फर्स्टवन रिहैब फाउंडेशन द्वारा नि:शुल्क फिजियोथेरेपी और ऑक्यूपेशनल थेरेपी शिविर का आयोजन किया गया।

जिसमें डॉ. महिपाल सिंह, डॉक्टर दीक्षा श्रीवास्तव, डॉ. सुष्मिता भाटी एवं डॉ. अभिषेक सिंह के द्वारा 53 मरीजों को थेरेपी और 25 मरीजों को स्वास्थ्य संबंधित परामर्श दिया गया।

इस कैम्प का उद्देश्य लोगो को वर्क रिलेटेड डिसऑर्डर्स और पोस्चरल प्रॉब्लम से संबंधित बीमारियों के बारें में जागरूक करना तथा माँसपेशियो और हड्डियों के दर्द से निवारण देना था।

'एक पेड़ मां के नाम' के तहत भाकियू नेता ने किया पौधारोपण

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) के पूर्व महानगर अध्यक्ष भूपेंद्र शर्मा ने आज नंगला चरण दास गांव स्थित बारातघर के परिसर में एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया।

इस अवसर पर उन्होंने कई पौधे रोपने के बाद कहा कि पौधा हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। पौधा हमें ऊर्जा देता है, इसलिए पौधा लगाने के साथ-साथ इसका पालन भी बहुत जरूरी है।

उन्होंने कहा कि आज भारत में एक पेड़ माँ के नाम अभियान चल रहा है और इस अभियान के तहत सभी लोगों को लगाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि पौधा बच्चों के समान होता है, इसलिए जैसे हम बच्चों का भरण-पोषण करते हैं, उसी तरह पौधे का भी भरण-पोषण एवं रखरखाव करना चाहिए।

सहित्यकार व पत्रकार अधिदर्शक की पुण्यतिथि पर कवि गोष्ठी

मिर्जापुर। त्रिवेणी संस्था और हिंदी श्री साहित्य संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में साहित्यकार व पत्रकार स्व. अधिदर्शक की प्रथम पुण्यतिथि पर विचार व काव्य गोष्ठी का आयोजन बरिया घाट स्थित द सिटी लॉन में हुआ। मुख्य अतिथि डॉ एस एन पाठक रहे व अध्यक्षता रविन्द्र कुमार पाण्डेय सरल ने किया। प्रसिद्ध नवगीतकार गणेश गंभीर, लल्लू तिवारी, राजपति ओझा और मुहीब मिर्जापुरी विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन रहे। कार्यक्रम का संचालन आनंद अमित और अनिल यादव ने संयुक्त रूप से किया।

कार्यक्रम का आरंभ अतिथियों ने मां सरस्वती और स्व अधिदर्शक की प्रतिमा का माल्यार्पण करके किया। सृष्टि राज ने मां सरस्वती की वंदना की। स्व अधिदर्शक के परिवार से उनके पुत्र कवि योगेश चतुर्वेदी ने कविता पढ़कर अपने पिता को याद किया। स्व अधिदर्शक की बहन स्नेहलता पाण्डेय व पुत्री जया पाठक, पुत्र वधू आस्था चतुर्वेदी और पूजा पाण्डेय ने श्रद्धांजलि अर्पित किया। उपस्थित सभी साहित्यकारों ने स्व अधिदर्शक को श्रद्धांजलि अर्पित किया।

अपने वक्तव्य में मुख्य अतिथि डॉ एस एन पाठक ने कहा कि स्व अधिदर्शक ने संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत किया लेकिन झुके नहीं। उनकी रचनाओं में उनका संघर्ष दिखाई देता है। आपके हाथ में गुलाब आए और दोस्त आनंद भवन रोता है दोनों पुस्तकों में गंभीर और समाज को राह दिखाने वाली रचनाएं हैं। रविन्द्र पाण्डेय ने कहा कि अधिदर्शक की रचनाएं हर वर्ग के लिए हैं। प्रसिद्ध नवगीतकार गणेश गंभीर ने कहा कि अधिदर्शक बहुत ही भावुक और स्पष्टवादी थे। प्रसिद्ध संचालक व कवि लल्लू तिवारी ने कहा कि अधिदर्शक एक क्रांतिकारी विचारक थे। चर्चित शायर मुहीब मिर्ज़ापुरी ने अधिदर्शक के लिखे ग़ज़लों की तारीफ की।

काव्यपाठ करने वालों में केदारनाथ सविता, गुमनाम मिर्ज़ापुरी, शिवप्रसाद द्विवेदी, आनंद अमित, श्याम अचल, सारिका चौरसिया, इरफान कुरैशी, हौसला प्रसाद मिश्र, रेखा चौरसिया, अमरनाथ सिंह, विजय श्रीवास्तव, मयंक प्रजापति शामिल थे।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से विमला शंकर दुबे, दीपक गुप्ता, कमलेश दुबे, चंद्रकांत तिवारी आदि उपस्थित रहे। अन्य में अनिल यादव ने सभी का धन्यवाद प्रकट किया।

कांग्रेस का संगठन सृजन अभियान तेज

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। जिला कांग्रेस कमेटी गौतमबुद्ध नगर द्वारा संगठन सृजन अभियान के तहत ब्लॉक बिसरख के ग्राम सादुल्लापुर और ब्लॉक दादरी के खटाना गांव में संगठन समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दोनों स्थानों पर कांग्रेस के ब्लॉक कार्यालयों का विधिवत उद्घाटन भी किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कांग्रेस अध्यक्ष दीपक भाटी 'चोटीवाला' ने की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि कांग्रेस पार्टी के अहमदाबाद अधिवेशन के निर्णय अनुसार 100 दिन के संगठन सृजन अभियान के तहत जिला, ब्लॉक, नगर, मंडल, न्याय पंचायत और बूथ स्तर तक पार्टी संगठन को मजबूत करने की दिशा में सतत कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 15 अगस्त को यह अभियान अपने 100 दिन पूरे करेगा।

दीपक भाटी ने कहा कि अब तक जिला कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में जिला, ब्लॉक और नगर कमेटियों का गठन हो चुका है। वर्तमान में मंडल और न्याय पंचायत स्तर पर समीक्षा की जा रही है, जबकि अगले पखवाड़े में बूथ स्तर पर गठित की जा रही समितियों का सत्यापन भी पूर्ण कर लिया जाएगा।

ब्लॉक बिसरख कार्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्लॉक अध्यक्ष विजय नागर और खटाना गांव में आयोजित कार्यक्रम में दादरी ब्लॉक अध्यक्ष तीरथराम वाल्मीकि ने उपस्थित कांग्रेस नेताओं और पदाधिकारियों का स्वागत किया। इस दौरान जिला समन्वयक आलोक गौड़ ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि ब्लॉक कांग्रेस इकाइयां संगठन की रीढ़ हैं। जितना मजबूत ब्लॉक होगा, उतना ही मजबूती से हम बूथ स्तर पर चुनावी जंग लड़ सकेंगे।

जिला समन्वयक जोगेश नेहरा ने कहा कि देश की राजनीति बदलाव के दौर से गुजर रही है और ऐसे समय में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संगठन को मजबूत करते हुए जनसमर्थन प्राप्त करने के लिए जुट जाना चाहिए।

सादुल्लापुर और खटाना गांव में हुए कार्यक्रमों का संचालन संगठन प्रभारी मुकेश शर्मा ने किया। इस अवसर पर आलोक गौड़ और जोगेश नेहरा ने जिला कांग्रेस अध्यक्ष दीपक चोटीवाला समेत अन्य वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में दोनों ब्लॉक कार्यालयों का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से आलोक गौड़, जोगेश नेहरा, विजय नागर, तीरथराम वाल्मीकि, मुकेश शर्मा, रन सिंह प्रधान, दुष्यंत नागर, पुनीत मावी, राजे मुखिया, किशन शर्मा, बबली नेताजी, चरण सिंह, कुलबीर राणा, धर्म सिंह वाल्मीकि, सरफराज़ खान, निशा शर्मा, रिज़वान चौधरी, रूबी चौहान, रमा नैय्यर, नीतीश चौधरी, ओमकुमार एडवोकेट, कैलाश बंसल, देवेश चौधरी, गौतम सिंह, रमेश वाल्मीकि, सचिन जीनवाल, नीरज शर्मा, बिन्नू नेताजी, कपिल भाटी, रमेश प्रधान, सतीश वाल्मीकि, विनोद शर्मा, नैन सिंह, मंजूर अली, राजकुमार राणा, गौरव राणा, विकास, कुलदीप सिंह, दीपक सिंह और अनवार मालिक आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पृष्ठ एक के शेष....

आज से अंतिम निवास...

अन्य अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ महामृत्युंजय का जाप हमेशा गूंजेगा।

बता दें कि अंतिम निवास में अंतिम क्रिया की वीडियोग्राफी, पार्थिव शरीर को स्नान कराने के लिए कई पवित्र नदियों के जल से युक्त जलाशय, स्पीकर से हमेशा धार्मिक कीर्तन-भजन तथा लकड़ी के अलावा सीएनजी शवदाह की भी व्यवस्था है।

नोएडा से दो...

साकीपुर गांव में किराए पर रहने वाले एक व्यक्ति की (14 वर्षीय) बेटी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। राकेश (काल्पनिक नाम)ने पुलिस से की शिकायत में बताया कि 12 जुलाई को उसके पड़ोस में रहने वाले व्यक्ति के बेटे के जन्मदिन की पार्टी चल रही थी उसकी बेटी भी पार्टी में गई थी देर रात्रि जब वह वापस घर नहीं लौटी तो परिजनों ने उसकी तलाश की लेकिन कोई पता नहीं चला पुलिस का कहना है कि दोनों पीड़ितों की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और किशोरियों की तलाश की जा रही है।

ऑटों में भरी थी...

ऑटो चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

वहीं थाना सूरजपुर क्षेत्र में 5 जुलाई को दुर्घटना में हुई मुनेश कुमार की मौत के मामले में ट्रक चालक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। दौलत राम कॉलोनी दादरी के रहने वाले तेज सिंह ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि उनका बेटा मुनेश कुमार 5 जुलाई की रात्रि को ड्यूटी खत्म कर बाइक से अपने घर आ रहा था। पीछे से तेज गति में आ रहे कंटेनर ट्रक ने मुनेश कुमार की बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर लगने से मुनेश कुमार मोटरसाइकिल से नीचे गिर गया और ट्रक का पिछला पहिया उसके ऊपर से उतर गया। इस हादसे में मुनेश कुमार की मौके पर ही मौत हो गई थी। तेज सिंह की शिकायत पर थाना सूरजपुर पुलिस ने दुर्घटना के आरोपी ट्रक ड्राइवर के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस पीड़ितों द्वारा उपलब्ध कराए गए वाहन नंबरों के आधार पर आरोपी चालकों की तलाश कर रही है।

दूसरे पक्ष ने कोर्ट के...

फोन किया और आकाश अवाना को कांफ्रेंस पर लिया। फोन करने वाले अज्ञात व्यक्ति ने आकाश अवाना को किसी लड़की के पास मैसेज करने की बात कहकर देख लेने की धमकी दी। अमित खारी के मुताबिक सेक्टर 48 निवासी सौरव यादव, सुमित यादव, प्रिंस यादव, आयुष त्रिपाठी सहित करीब 15 अज्ञात लोग चार गाड़ियों में भरकर ग्राम गिझौड़ पहुंचे। इनमें दो गाड़ियों पर भारत सरकार व राज्य सरकार लिखा हुआ था। इन लोगों ने आकाश अवाना के साथ गाली-गलौज करते हुए मारपीट शुरू कर दी। विरोध करने पर आरोपियों ने अपने साथ लाए हथियारों से फायरिंग कर दी। मौके पर लोगों की भीड़ को इकट्ठा देखकर सभी लोग आकाश अवाना को जान से मारने की धमकी देकर चले गए। अमित खारी के मुताबिक उक्त लोगों में कुछ लोगों के खिलाफ कई थानों में हत्या का प्रयास करने जैसे कई मुकदमे पंजीकृत हैं। इन लोगों में ज्यादातर व्यक्ति अपराधिक किस्म के हैं। उन्होंने आशंका जताई कि यह लोग कभी भी कहीं पर भी आकाश अवाना व उसे जान से मार सकते हैं। जिस कारण आकाश अवाना व उसका परिवार भी डरा-सहमा हुआ है।

बता दे कि जून माह में हुए इस झगड़े की कई वीडियो वायरल हुई थी। एक वीडियो में थार कार से एक युवक को कुचलने का प्रयास किया गया था। वीडियो में मारपीट करते हुए भी कुछ लोग दिख रहे थे। उस समय इस मामले ने खासा तूल पकड़ा था। पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने मामले पर कड़ा रुख अख्तियार करते हुए थाना सेक्टर-24 प्रभारी व चौकी प्रभारी के खिलाफ कार्रवाई की थी। उस समय 6 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। इस मामले में पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया था। अब इस मामले में दूसरे पक्ष के लोगों ने न्यायालय का सहारा लेकर क्रॉस रिपोर्ट दर्ज कराई है। थाना सेक्टर-24 पुलिस का कहना है कि यह मुकदमा न्यायालय के निर्देश पर दर्ज किया गया है और इसकी जांच की जा रही है।

पुलिस की गोली...

बदमाश को उपचार के लिए अस्पताल भेज कर अन्य दो बदमाशों की तलाश शुरू की गई। एडीसीपी ने बताया कि पुलिस ने कांबिंग के दौरान मौके से फरार हुए संतोष व गुलशन निवासी तिगड़ी गेट को गिरफ्तार कर लिया। इनके पास से एक-एक चाकू चोरी के दो मोबाइल फोन बरामद हुए।

एडीसीपी ने बताया कि पकड़े गए तीनों आरोपी शातिर लुटेरे हैं और दिल्ली एनसीआर में लूट व चोरी की घटनाओं को अंजाम देते हैं। इस गिरोह का सरगना नीरज उर्फ अय्या है। नीरज पर दिल्ली नोएडा में लूट चोरी के 18 मुकदमें पंजीकृत हैं पकड़े गए दो अन्य दो बदमाशों के आपराधिक इतिहास की जानकारी जुटा जा रही है

संजीव जीवा और मुख्तार...

यह सिविल लाइन मुजफ्फरनगर से वर्ष 2016 में फरार हो गया। फरारी के दौरान जीवा के कहने पर इसने हरिद्वार में कंबल व्यापारी गोल्डी की हत्या 2017 में कर दी थी। इसी फरारी के दौरान आसिफ जायदा मर्डर केस के गवाह आसिफ जायदा के पिता की हत्या वर्ष 2017 में कोतवाली मुजफ्फरनगर में कर दी थी। इस हत्या के बाद इसपर 50 हजार का इनाम घोषित किया गया था। इसके पश्चात गिरफ्तार होकर जेल चला गया था। गोल्डी मर्डर केस में संजीव जीवा के साथ उम्र क़ैद की सजा हो गई थी। वर्तमान में जमानत पर चल रहा था। करीब 6 माह पूर्व जमानत पर आने के बाद इसने हत्या के मुकदमों के गवाही देने वालों को धमकाना और मारने का प्रयास करने में संभल में हत्या के प्रयास और धमकी देने का मुकदमा पंजीकृत किया गया था जिसमे यह वांछित चल रहा था।

दिल्ली के तीन स्कूलों...

दिल्ली पुलिस ने बताया कि तीनों स्कूलों को सोमवार सुबह एक ईमेल प्राप्त हुआ, जिसमें स्कूल कैंपस में बम होने की धमकी दी गई थी। इनमें से एक चाणक्यपुरी तो दूसरा द्वारका सेक्टर-16 व प्रशांत विहार में स्थित है।

पुलिस ने बताया कि इस तरह की धमकियां पहले भी दिल्ली NCR के कई स्कूलों को ईमेल के जरिए से मिल चुकी हैं। पुलिस ने इसे गंभीरता से लेते हुए तुरंत खोजबीन शुरू की। दोनों स्कूलों को खाली करा लिया गया है और छात्रों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया। हालांकि, सर्च के दौरान अब तक कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला है।

द्वारका पुलिस ने बताया कि 14 जुलाई को तड़के द्वारका उत्तर पुलिस थाने क्षेत्र में स्थित सीआरपीएफ स्कूल को बम की धमकी वाला एक ईमेल मिलने के संबंध में पीसीआर कॉल मिली. इसके बाद तुरंत पूरे इलाके में तलाशी ली गई। स्थानीय पुलिस, पीसीआर, डॉग स्क्वॉड और बम निरोधक दस्ता स्कूल पहुंच गए और पूरे स्कूल की तलाशी ली।

दो लोगों से मोबाइल छीना

नोएडा (चेतना मंच)। अलग-अलग स्थानों से बाइक सवार झपटमारों ने दो लोगों से मोबाइल फोन छीन लिया और फरार हो गए। सर्फाबाद गांव में रहने वाले नवीन सिंह ने थाना सेक्टर-58 में मोबाइल फोन छीने जाने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि वह सेक्टर-51 से अपने ऑफिस सेक्टर-58 जा रहे थे सेक्टर-59 के पास बाइक सवार दो बदमाशों ने उनका मोबाइल फोन छीन लिया और फरार हो गए। वहीं थाना बीटा-2 में संभल निवासी महावीर ने अपने बेटे से मोबाइल फोन छीनने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। महावीर ने बताया कि उनका बेटा ग्राम मिल्क लच्छी के पास गोल चक्कर पर खड़ा हुआ था। इस दौरान दो बदमाश उससे मोबाइल फोन छीनकर फरार हो गए। पुलिस ने पीड़ितों की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है।

गलत रिचार्ज करने पर मेंटनेंस कर्मी को पीटा

नोएडा (चेतना मंच)। थाना एक्सप्रेसवे क्षेत्र के टुडे होम सोसाइटी में रहने वाले एक व्यक्ति ने सोसायटी के मेंटेनेंस कर्मी की पिटाई कर दी। मेंटेनेंस कर्मी का कसूर सिर्फ इतना था कि उसे गलत रिचार्ज हो गया था। सेक्टर-137 निवासी अनिल तोमर ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह टुडे होम सोसाइटी के मेंटेनेंस डिपार्टमेंट में हेल्प डेस्क पर काम करता है। हेल्प डेस्क के फोन पर हरवीर सिंह नामक सोसायटी वासी का फोन आया और उसने रिचार्ज के बारे में पूछा। उसने बताया कि उसके फ्लैट नंबर पर गलत रिचार्ज हो गया है जो उनके मीटर से काटा गया है। अगर वह जानकारी शेयर कर दें तो वह उनका दोबारा रिचार्ज कर देगा। अनिल तोमर के मुताबिक कुछ देर बाद हरवीर सिंह मेंटेनेंस ऑफिस में आया और गाली गलौज करने लगा। उसने जब इस बात का विरोध किया तो हरवीर ने लाठी से उसकी पिटाई शुरू कर दी। घायल करने के बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देकर अपने फ्लैट में चला गया। पीड़ित के मुताबिक हरवीर का परिजन शिवा भी उसे शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दे रहा हैं। पुलिस का कहना है कि पीड़ित की शिकायत पर हरवीर सिंह व शिवा के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है।

उद्यान विभाग ने सूखे पौधे हटाए, नए पौधे लगाए

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा के जगत फार्म रोटरी से लेकर ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के पुराने ऑफिस की रोटरी तक पौधों के सूखने की सूचना को सीईओ एनजी रवि कुमार ने संज्ञान में लिया और एसीईओ श्रीलक्ष्मी वीएस को सूखे पौधे तत्काल हटवाने और नए पौधे लगाने के निर्देश दिए। एसीईओ ने इस पर तत्काल संज्ञान लेकर उद्यान विभाग की टीम को भेजकर सूखे पौधों की जगह नए पौधे लगवा दिए हैं। उद्यान विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक पीपी मिश्रा ने बताया कि गर्मी में पौधरोपण होने पर कुछ पौधे सूख जाते हैं, जिनको बरसात में बदला जाता है और इसी तरह सर्दी में सूखने वाले पौधों को फरवरी में बदलकर नए पौधे लगाए जाते है। उद्यान विभाग इस कार्य को नियमित रूप से कर रहा है। जगत फार्म रोटरी से ग्रेनो प्राधिकरण के पुराने ऑफिस रोटरी तक के सूखे पौधों को रविवार सुबह ही बदल दिया गया है।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण शहर को हरा भरा बनाने के लिए तत्पर है। इसीलिए शासन से मिले लक्ष्य को बढ़ाकर सीईओ ने 2 लाख से अधिक पौधे लगाने के निर्देश दिए हैं। इसी वजह से एसीईओ श्री लक्ष्मी वीएस इस पौधरोपण अभियान का खुद से नेतृत्व कर रही है। इसके अतिरिक्त कहीं भी पौधे सूख रहे हैं तो उनको भी बदलकर नए पौधे लगाए जाएंगे।

दो झपटमार गिरफ्तार

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-58 पुलिस ने चेकिंग के दौरान दो शातिर झपटमारों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से चोरी की बाइक, छीने गए दो मोबाइल फोन बरामद हुए हैं।

थाना प्रभारी अमित कुमार ने बताया कि पुलिस टीम सेक्टर-59, 60 की मध्य रोड पर चेकिंग कर रही थी। इस दौरान सेक्टर-59 की तरफ से बाइक पर बिना हेलमेट आ रहे दो युवक पुलिस को देखकर भाग निकले। संदेह के आधार पर पुलिस टीम ने इनका पीछा कर इन्हें सेक्टर-60 में दबोच लिया था। पूछताछ में बाइक सवारों ने अपना नाम राजू यादव पुत्र भोजराज व राजन कुमार पुत्र शैलेश कुमार निवासी नेहरू गार्डन खोड़ा कॉलोनी बताया। तलाशी में उनके पास से दो मोबाइल फोन भी बरामद हुए। सख्ती से पूछताछ करने पर दोनों युवकों ने स्वीकार किया कि उनके पास से बरामद बाइक चोरी की है। यह मोटरसाइकिल उन्होंने दिल्ली से चोरी की थी। उनसे बरामद मोबाइल फोन राहगीरों से छीने गए हैं।

थाना प्रभारी ने बताया कि पकड़े गए दोनों आरोपी चोरी की बाइक पर सवार होकर झपटमारी की वारदातों को अंजाम देते हैं। पकड़े गए दोनों बदमाशों के खिलाफ मुकदमा दर्ज न्यायालय में पेश किया गया है।

दैनिक चेतना मंच
भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।
डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99
RNI No. 69950/98
स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने M/s Sai Printing Press, डी-85 सेक्टर-6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया।
संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी
Contact:
0120-2518100, 4576372, 2518200
Mo.: 9811735566, 8750322340
E-mail:
chetnamanch.pr@gmail.com
raghuvanshirampal365@gmail.com
raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in
www.chetnamanch.com

खास खबर

दक्षिण भारतीय फिल्मों के मशहूर अभिनेता कोटा श्रीनिवास का निधन

मुंबई। बॉलीवुड और दक्षिण भारतीय फिल्मों के हीरो कोटा श्रीनिवास राव का निधन हो गया। उन्होंने हैदराबाद के जुबली हिल्स स्थित फिल्मनगर में अपने घर पर अंतिम सांस ली। वह 83 साल के थे। वह बीजेपी से विधायक भी रह थे। वह पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित थे। उनका राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार होगा। एक्टर विष्णु मांचू समेत कई कलाकारों ने उनके निधन पर शोक जताया है। विष्णु मांचू ने एक्स पर कोटा श्रीनिवास की एक तस्वीर शेयर कर लिखा- शब्दों से परे एक महान व्यक्ति। कोटा श्रीनिवास के निधन से मेरा दिल भारी है। एक अद्भुत अभिनेता, बेजोड़ प्रतिभा, और एक ऐसा व्यक्ति जिसकी उपस्थिति हर फ्रेम को रोशन कर देती थी। चाहे वह गंभीर भूमिका हो, खलनायक हो या कॉमेडी उन्होंने हर किरदार में जान डाल दी थी, जो केवल कुछ ही लोगों को नसीब होती है। मांचू ने आगे लिखा- मुझे उनके साथ कई फिल्मों में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैंने उन्हें कई और फिल्मों में देखा। उनके काम ने मेरे सिनेमा के प्रति चाह को आकार दिया। उनके परिवार को मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। हमने उन्हें शारीरिक रूप से खो दिया है, लेकिन उनकी कला, रेस्ट इन पीस, सर, आपको याद किया जाएगा। आपको हमेशा याद रखा जाएगा।

डगमगा रहा है रामकृष्ण सेतु, दरारों से निकलीं सरिए

हुगली। जिले के आरामबाग में द्वारकेश्वर नदी पर स्थित रामकृष्ण सेतु की हालत दिनों-दिन बदतर होती जा रही है। इस पुल की स्थिति जर्जर होने के बावजूद इस पर से होकर प्रतिदिन सैकड़ों ओवरलोडेड ट्रक, हजारों सरकारी और निजी बसें तथा अन्य भारी वाहन गुजरते हैं। रामकृष्ण सेतु दक्षिण बंगाल के दो मेदिनीपुर, झाड़ग्राम और बांकुड़ा जिलों को हुगली जिले से जोड़ने वाला एकमात्र संपर्क मार्ग है। यही वजह है कि इस पुल पर यातायात का दबाव हमेशा अधिक रहता है। लेकिन वर्तमान में पुल के कंक्रीट की परतें टूट चुकी हैं और भीतर से लोहे की सरिए बाहर निकल आई हैं। पुल की साइड में भी लोहे की छड़ें जंग खाकर कमजोर हो चुकी हैं। पिच की परत उखड़ चुकी है, जिससे पुल की सतह बेहद खराब हो गई है।

जगह-जगह गड्ढे बन गए हैं और सड़क ऊबड़-खाबड़ हो गई है। हालात की गंभीरता के बावजूद पुल पर महज एक चेतावनी बोर्ड लगाया गया है, जिसमें लिखा है कि पुल कमजोर है। परंतु इसके बावजूद भारी ओवरलोडेड ट्रकों की आवाजाही लगातार जारी है। जिससे पुल में कंपन महसूस होता है। स्थानीय लोग दहशत में हैं कि कहीं यह पुल भी गुजरात के मोरबी हादसे की तरह किसी दिन अचानक न ढह जाए। एक स्थानीय निवासी ने बताया कि हमें बहुत परेशानी हो रही है। नदी में बाढ़ का पानी बढ़ता जा रहा है, और पुल की हालत खराब होने से गाड़ियां सुचारू रूप से नहीं चल पा रही हैं। यातायात में बहुत दिक्कत हो रही है। हम डरे हुए हैं कि कोई बड़ी दुर्घटना न हो जाए।

बदरीनाथ धाम में आपरेशन कालनेमि शुरू

गोपेश्वर। धार्मिक स्थानों के साथ ही चमोली जिले के अनेक स्थानों पर रह रहे बाबाओं की सही पहचान करने के लिए चमोली पुलिस ने भी धामी सरकार की ओर से चलाए जा रहे 'आपरेशन कालनेमि' की शुरूआत कर दी है। चमोली जिले के बदरीनाथ धाम में कोतवाली बदरीनाथ पुलिस की ओर से नकली बाबाओं और धार्मिक चोला पहनकर ठगी करने वालों के खिलाफ आपरेशन कालनेमि शुरू कर दिया है। इसके चलते पुलिस ने धार्मिक स्थलों पर सक्रिय फर्जी साधु-बाबाओं की पहचान और सत्यापन की कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस की ओर से अभियान चलाकर धाम में मौजूद संदिग्ध बाबाओं को थाने लाकर इनसे पूछताछ की गई और उनके पहचान पत्र और दस्तावेजों की गहन जांच की गई।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर ट्रक में पीछे से घुसी मिनी बस, 4 की मौत, कई घायल

- सभी मृतक एक ही परिवार के, इंदौर में सगाई समारोह से करौली लौट रहा था परिवार

एजेंसी

कोटा। राजस्थान के कोटा जिले में रविवार सुबह दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर चंबल पुल के पास एक तेज रफ्तार मिनी बस ने आगे जा रहे ट्रक में पीछे से जा टकराई, जिससे एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई और 10 लोग गंभीर रुप से घायल हो गए। बस में इंदौर से सगाई समारोह में शामिल होकर लौट रहा करौली का एक परिवार सवार था। पुलिस और चश्मदीदों के मुताबिक हादसा सुबह करीब 5 बजे बुढ़ादित थाना क्षेत्र में हुआ। बताया जा रहा है कि मिनी बस चालक को झपकी आ गई, जिससे बस नियंत्रण खो दिया और बस आगे चल रहे ट्रक में जा भिड़ी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि मिनी बस के परखच्चे उड़ गए। जिससे 4 लोगों की मौत मौके पर ही हो गई, जबकि 10 लोग गंभीर रूप से घायल हैं। मृतकों की पहचान गीता सोनी (63), उनके दो बेटे ब्रजेश सोनी (45) और अनिल सोनी (48), व दामाद सुरेश सोनी (45) के रूप में हुई है। गीता सोनी के बेटे

अनिल और ब्रजेश ज्वेलरी का कारोबार करते थे, जबकि दामाद सुरेश भरतपुर में सरकारी टीचर थे। एसपी (ग्रामीण) ने बताया कि शुरूआती जांच से पता चलता है कि हादसे का कारण ड्राइवर को नींद आना है। बस की रफ्तार काफी तेज थी और चंबल पुल पर वह सीधे ट्रक में जा घुसी। मिनी बस की स्थिति देखकर हादसे की भयावहता का अंदाजा लगाया जा सकता है। सोनी परिवार शनिवार को मध्य प्रदेश के इंदौर गया था, जहां परिवार के एक सदस्य का सगाई और गोदभराई समारोह आयोजित किया गया था। कार्यक्रम के बाद परिवार के 14 लोग एक मिनी बस से रात करीब 9 बजे इंदौर से करौली के लिए रवाना हुए थे। सुबह तड़के कोटा के पास यह हादसा हो गया। घटना के बाद घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। चार गंभीर रूप से घायलों को निजी अस्पताल में शिफ्ट किया है। तीन घायलों को प्राथमिक इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई।

हरिद्वार में कांवड़ लेने पहुंच रहे शिव भक्त, अब तक 6 लाख ने भरे कावड़

- डीएम ने की अपील कांवड़िए पटरी का ही करें उपयोग ताकि परेशानी न हो

एजेंसी

हरिद्वार। सावन के महीने में हरिद्वार में चल रहे कांवड़ मेले में शिवभक्तों की श्रद्धा देखने को मिल रही है। देश के कई राज्यों से आए श्रद्धालु गंगाजल भरकर अपने-अपने गंतव्यों को जा रहे हैं। मेला प्रशासन के मुताबिक शुक्रवार को करीब 4 लाख शिवभक्तों ने गंगाजल भरकर यात्रा शुरू की, जबकि शनिवार को कांवड़ यात्रियों की संख्या 6 लाख पहुंच गई। जो अब तक के आंकड़ों में सबसे बड़ी संख्या बताई जा रही है। हरिद्वार में कांवड़ यात्रियों की संख्या गुरु पूर्णिमा से शुरू हो गई थी। गुरुपूर्णिमा पर 3.90 लाख शिवभक्तों ने हरकी पैड़ी समेत कई घाटों से गंगाजल एकत्र कर जलाभिषेक के लिए प्रस्थान किया था। अब कांवड़ मेले में दिन-प्रतिदिन शिवभक्तों की संख्या में तीव्र वृद्धि हो रही है। गंगाजल भरने के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतारें लगी है।

तमिलनाडु में मालगाड़ी पटरी से उतरी, 18 बोगियां जली

- मैसूर वंदे भारत ट्रेन, जो सुबह 5:50 बजे सेंट्रल से रवाना होने वाली थी, उसे चेन्नई सेंट्रल रेलवे स्टेशन पर रोक दिया गया है

52 बोगियों में डीजल था, 40 अलग की गई

एजेंसी

तिरुवल्लूर। तमिलनाडु के चेन्नई सेक्टर से ईंधन लेकर आ रही मालगाड़ी में तिरुवल्लूर रेलवे स्टेशन पहुंचते ही अचानक आग लग गई और धीरे-धीरे विभिन्न ईंधनों से भरे टैंकर डिब्बों में फैल गई। रविवार को हुई इस घटना में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। हालांकि इलेक्ट्रिक ट्रेन सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हुई हैं। तिरुवल्लूर जिले के पुलिस अधीक्षक श्रीनिवास पेरुमल घटनास्थल पर पहुंच गए हैं और जाँच कर रहे हैं। तिरुवल्लूर जिले के पुलिस अधीक्षक श्रीनिवास पेरुमल ने बताया कि इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। इलाके के लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया है। इस वजह से उस रूट पर चलने वाली सभी ट्रेनों को विभिन्न स्थानों पर अस्थायी रूप से रोक दिया गया है, जिससे ट्रेन सेवाओं में भारी व्यवधान उत्पन्न हुआ है। मैसूर वंदे भारत ट्रेन, जो सुबह 5:50 बजे सेंट्रल से रवाना होने वाली थी, उसे चेन्नई सेंट्रल रेलवे स्टेशन पर रोक दिया गया है। इसी तरह, मैसूर शताब्दी एक्सप्रेस, जो सुबह 6 बजे रवाना होने वाली थी, उसे भी रोक दिया गया है। अरक्कोणम होते हुए चेन्नई सेंट्रल आने वाली एक्सप्रेस ट्रेनों को बीच में ही रोक दिया गया है। आग लगने से इलाके में ट्रेन सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हुई हैं। एक वरिष्ठ रेलवे अधिकारी ने बताया कि यात्रियों की सुविधा के लिए तिरुवल्लूर से चेन्नई और अरक्कोणम के लिए दस से ज्यादा विशेष बसें चलाई जाएँगी।इसी तरह, उपनगरीय रेल सेवाओं के संबंध में, उपनगरीय इलेक्ट्रिक ट्रेन केवल चेन्नई सेंट्रल से अवादी तक ही चलाई जा रही है। एक वरिष्ठ रेलवे अधिकारी ने बताया कि इस आग दुर्घटना के संबंध में आपातकालीन सहायता के लिए चेन्नई सेंट्रल में एक आपातकालीन सेवा केंद्र स्थापित किया गया है।

संभाजीनगर को मिलेगा नया स्किल डेवलपमेंट हब, ऑरिक में होगा निर्माण

एजेंसी

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के औरंगाबाद (संभाजीनगर) में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के सहयोग से औरंगाबाद इंडस्ट्रियल सिटी (ऑरिक) में 20,000 वर्ग फुट क्षेत्र में एक नया कौशल विकास केंद्र स्थापित किया जाएगा। इस संबंध में अगले सप्ताह समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जाने की संभावना है। उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) के सचिव अमरदीप सिंह भाटिया ने छत्रपति संभाजीनगर के दौरे के दौरान इस पहल की जानकारी दी। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र में औद्योगिक बुनियादी ढांचे और स्टार्टअप विकास की प्रगति की समीक्षा की। सचिव ने ऑरिक को नवाचार और उच्च मूल्य निर्माण का वैश्विक केंद्र बनाने की दिशा में अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) केंद्रों और वैश्विक क्षमता केंद्रों (जीसीसी) में निवेश आकर्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया। दौरे के दौरान आयोजित उद्योग संवाद सत्र में सीआईआई, फिक्की, एसोचैम, सीएमआईए और मासिया जैसे प्रमुख उद्योग संगठनों ने हिस्सा लिया और क्षेत्र की जरूरतों व सुझावों को प्रस्तुत किया।

पाकिस्तान में बारिश का कहर 16 दिन में 98 लोगों की मौत

एजेंसी

इस्लामाबाद। अरब सागर से आई नमी की वजह से पंजाब में मॉनसून एक्टिव है। लाहौर में रुक-रुक कर बारिश हो रही है, जिससे नमी (ह्यूमिडिटी) बढ़ गई है। एनडीएमए के अनुसार, 26 जून से यानी 16 दिन में अब तक देशभर में मूसलाधार बारिश और अचानक आई बाढ़ के कारण कम से कम 98 लोगों की जान चली गई है और 185 अन्य घायल हो गए हैं। पंजाब प्रांत में सबसे अधिक 37 मौतें हुईं, जिनमें 20 बच्चे शामिल हैं, इसके बाद खैबर पख्तूनख्वा में 30 लोगों की जान गई।अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि कई जगह तेज बारिश से नदियों का पानी बढ़ सकता है। कुछ कमजोर इलाकों में बाढ़ आने की भी आशंका जताई गई है। पाकिस्तान के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और पंजाब की प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने लोगों से सावधान रहने और पानी भरे हुए इलाकों में जाने से बचने की अपील की है। खासकर 17 जुलाई तक अलर्ट रहने के कारण लोगों को सतर्क रहने को कहा गया है। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, सिंधु, काबुल, झेलम और चिनाब सहित सभी प्रमुख नदियों में पानी का बहाव बढ़ने की संभावना है। बलूचिस्तान के झल मागसी, कच्छी, सिबी, किल्ला सैफुल्लाह, झोब और मुसाखेल जिलों में अचानक बाढ़ आने की संभावना है।

ईरान की अमेरिका को दो टूक कहा-

बात तभी होगी जब हम पर हमला नहीं होगा

एजेंसी

तेहरान। ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु वार्ता की बहाली एक बार फिर चर्चा में है, लेकिन इस बार ईरान ने स्पष्ट कर दिया है कि बिना सुरक्षा गारंटी के अब कोई बातचीत नहीं होगी। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराजची ने तेहरान में विदेशी राजनयिकों से कहा, हमारा देश हमेशा से परमाणु कार्यक्रम को लेकर बातचीत के लिए तैयार रहा है, लेकिन यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बातचीत की प्रक्रिया युद्ध में तब्दील न हो। लेकिन क्या ईरान की ये शर्त इजरायल मानेगा? अराग्ची का यह बयान ऐसे समय आया है जब पिछले 12 दिनों में ईरान पर इजरायल की बमबारी और 22 जून को अमेरिका के हवाई हमले से ईरान के कई न्यूक्लियर और मिलिट्री प्रतिष्ठान बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। उन्होंने कहा, अगर अमेरिका या अन्य देश बातचीत चाहते हैं, तो पहले यह ठोस गारंटी दें कि ऐसे हमले दोबारा नहीं होंगे। ईरान का कहना है कि इन हमलों के चलते अब बातचीत की प्रक्रिया और जटिल हो गई है ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन ने भी कहा कि अमेरिकी हमलों ने उनके परमाणु ठिकानों को इतनी बुरी तरह क्षतिग्रस्त किया है कि अब तक वहां पहुंचना और क्षति का पूरा आकलन करना भी संभव नहीं हो पाया है। जहां अमेरिका और इजरायल का आरोप है कि ईरान परमाणु हथियारों के बेहद करीब पहुंच चुका है, वहीं ईरान ने एक बार फिर जोर देकर कहा कि यूरेनियम संवर्धन ईरान की संप्रभुता का हिस्सा है और वह इसे अपनी जमीन पर ही जारी रखेगा। अब निगाहें अमेरिका पर हैं कि क्या वे इस शर्त के साथ बातचीत की बहाली को स्वीकार करते हैं या टकराव का रास्ता और गहराता है। वहीं ईरान ने इस घटनाक्रम के बाद संयुक्त राष्ट्र परमाणु निगरानी एजेंसी आईएईए से सहयोग भी सस्पेंड कर दिया है और उसके निरीक्षकों को हटा लिया गया है।

बांग्लादेश ने शेख हसीना के खिलाफ चली नई चाल, बेटी को डब्ल्यूएचओ ने भेज दिया छुट्टी पर

एजेंसी

लंदन। बांग्लादेश की पूर्व पीएम शेख हसीना भी मुश्किल में हैं। उन पर भी एक विशेष ट्रिब्यूनल ने गंभीर आरोप लगाते हुए शेख हसीना को मानवता के खिलाफ अपराध के आरोपों में अभियुक्त घोषित कर दिया। बताया गया कि पिछले साल छात्र आंदोलन के दौरान सैकड़ों छात्रों की मौत के मामले में यह कदम उठाया गया। ट्रिब्यूनल ने हसीना के साथ पूर्व गृहमंत्री असदुज्जमां खान और पूर्व पुलिस प्रमुख चौधरी अब्दुल्ला अल-मामून को भी आरोपी माना है। फिलहाल हसीना और खान दोनों भारत में निर्वासन में हैं और अदालत में पेश नहीं हुए। वहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन

(डब्ल्यूएचओ) ने दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र की डायरेक्टर साइमां वाजेद को अनिश्चितकालीन छुट्टी पर भेज दिया है। साइमां हसीना की बेटी हैं। यह फैसला ऐसे समय पर आया है जब बांग्लादेश की अंतरिम सरकार उन पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगा रही है। डब्ल्यूएचओ के डायरेक्टर जनरल टेड्रोस घेब्रेयेसस ने एक आधिकारिक ईमेल में जानकारी दी कि साइमां वाजेद तत्काल प्रभाव से छुट्टी पर जाएंगी।

उत्तर कोरिया के सहयोग से रूस ने किए यूक्रेन पर 623 हवाई हमले, 13 लोगों की मौत

एजेंसी

कीव। उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता किम जोंग उन ने रूस-यूक्रेन युद्ध में मॉस्को को बिना शर्त समर्थन देने की घोषणा की है। यह बात उत्तर कोरिया की सरकारी मीडिया रिपोर्ट्स में सामने आई है। उत्तर कोरिया में रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव के साथ मुलाकात में किम ने स्पष्ट किया कि प्योंगयांग यूक्रेन संकट की जड़ तक पहुंचने के लिए रूसी नेतृत्व की ओर से उठाए गए सभी कदमों के साथ पूरी तरह खड़ा है। इसी सहयोग के चलते रूस ने यूक्रेन पर इस महीने का चौथा बड़ा हमला करते हुए शनिवार को एक भीषण ड्रोन और मिसाइल हमले की बौछार कर दी, जिसमें कम से कम 13 लोगों की जान चली गई। यह हमला खास तौर पर पश्चिमी यूक्रेन के उन इलाकों में किया गया जहां माना जा रहा था कि यहां अटैक होना मुश्किल होगा। यूक्रेन की वायुसेना के मुताबिक, रूस ने बीते 24 घंटों में 623 ड्रोन और 26 मिसाइलें दागीं। इनमें से 319 ईरानी-निर्मित शहीद कामिकाजे ड्रोन थे, जो हाल के हफ्तों में रूस की हमलावर रणनीति का प्रमुख हिस्सा बन चुके हैं।

लंदन में प्रतिबंधित संगठन

पैलेस्टाइन एक्शन के समर्थन में प्रदर्शन, 40 से अधिक लोग गिरफ्तार

एजेंसी

लंदन। ब्रिटेन सरकार द्वारा 'पैलेस्टाइन एक्शन' को आतंकी संगठन घोषित किए जाने के खिलाफ लंदन के केंद्रीय हिस्से में हुए प्रदर्शन में 42 लोगों को गिरफ्तार किया गया। यह प्रदर्शन उस निर्णय के विरोध में था, जिसमें समूह को टेररिज्म एक्ट 2000 के तहत प्रतिबंधित किया गया है। मेट्रोपॉलिटन पुलिस ने बताया कि इन गिरफ्तारियों में से अधिकांश प्रतिबंधित संगठन का समर्थन करने के आरोप में की गईं। इसमें नारे लगाना, कपड़े पहनना, झंडे या प्रतीक दिखाना जैसी गतिविधियां शामिल थीं। एक व्यक्ति को सामान्य हमले (कॉमन असॉल्ट) के आरोप

में गिरफ्तार किया गया। यह लगातार दूसरा सप्ताह था जब प्रदर्शनकारियों ने 'पैलेस्टाइन एक्शन' के समर्थन में प्रदर्शन किया। पिछले सप्ताह भी इसी तरह के प्रदर्शन में 29 लोगों को गिरफ्तार किया गया था।प्रदर्शनकारी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेता महात्मा गांधी और दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला की प्रतिमाओं के नीचे एकत्रित हुए। शांतिपूर्वक हुए इस प्रदर्शन में कुछ लोगों के हाथों में आई अपोज जेनोसाइड, आई सपोर्ट पेलेस्टाइन एक्शन जैसे संदेश लिखे पोस्टर थे। पुलिस और मीडियाकर्मियों की भारी मौजूदगी में प्रदर्शनकारियों को घेरे रखा गया। इस दौरान कुछ प्रदर्शनकारी जमीन पर लेट गए, जिन्हें पुलिस ने उठाकर वेटिंग पुलिस वैन में बैठाया। इस दौरान उनके बैग्स की तलाशी ली गई और पोस्टर-जैसे सामग्री जब्त की गई। इस प्रदर्शन के साथ ही मैनचेस्टर, कार्डिफ और उत्तरी आयरलैंड के लंडनडेरी में भी इसी प्रकार के विरोध प्रदर्शन आयोजित किए गए। ब्रिटेन सरकार ने 20 जून को ऑक्सफोर्डशायर स्थित ब्राइज नॉर्टन आरएएफ बेस में हुए एक घुसपैठ और तोड़फोड़ की घटना के बाद 'पैलेस्टाइन एक्शन' पर प्रतिबंध लगाया।

शांति पर संशय : हमास के 35 ठिकानों पर इजरायल ने किया हमला

- गाजा में संघर्ष विराम को लेकर चल रही बातचीत एक बार फिर अनिश्चितता में घिर गई है

एजेंसी

गाजा। इजरायल का आरोप है कि हमास समझौते को जानबूझकर तोड़ रहा है और लचीलापन नहीं दिखा रहा। यह खबर ऐसे समय में आई है जब इजरायल ने 35 हमास ठिकानों को निशाना बनाया। कुल मिलाकर गाजा में संघर्ष विराम को लेकर चल रही बातचीत एक बार फिर अनिश्चितता में घिर गई है। शनिवार को हमास और इजरायल ने एक-दूसरे पर बातचीत में

अड़चन डालने का आरोप लगाया। इस दौरान कतर में मध्यस्थता की कोशिशें जारी रहीं, जबकि इजरायली बंधकों के परिजन सरकार पर समझौता करने का दबाव बना रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, एक फिलिस्तीनी सूत्र ने बताया कि इजरायल गाजा के कई हिस्सों में अपने सैनिक बनाए रखना चाहता है, जो 60 दिन के संघर्ष विराम में सबसे बड़ी बाधा बन गया है। बातचीत के बीच गाजा में बमबारी जारी रही। गाजा सिटी के निवासी बासम हमदान ने कहा, हम सो रहे थे कि अचानक धमाका हुआ।मां और तीन बच्चों के शव टुकड़ों में मिले। दक्षिणी गाजा में घायलों को गधों पर लादकर या कंधों पर उठाकर अस्पताल लाया गया। इजरायली सेना का कहना है कि उसने 48 घंटों में गाजा में 250 से ज्यादा आतंकी ठिकानों पर हमला किया। वहीं, हमास-नियंत्रित स्वास्थ्य मंत्रालय का दावा है कि अब तक 57,882 फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं। सूत्रों के अनुसार, इजरायल करीब 40 प्रतिशत गाजा क्षेत्र में सैन्य मौजूदगी बनाए रखना चाहता है, जिससे लाखों विस्थापित फि लिस्तीनी रफा के पास सीमित इलाके में फंसे रहेंगे। हमास का मानना है कि ये नक्शे गाजा पर दोबारा कब्जे को जायज ठहराने की कोशिश हैं। बातचीत में अमेरिका के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ के कतर पहुंचने तक विराम की बात कही गई है। इजरायली मीडिया के मुताबिक, रविवार को इजरायल नई योजनाएं पेश कर सकता है।

न्यूयार्क दुनिया का सबसे महंगा शहर, 1.6 करोड़ सैलरी फिर भी परेशान

एजेंसी

न्यूयार्क सिटी। कहा जाता है कि जितना बड़ा शहर होगा उतना ही ज्यादा खर्चा होगा। इस बात को न्यूयॉर्क में रहने वाली भारतीय युवती मैत्री मंगल ने कर दी है। मैत्री ने अपनी सोशल मीडिया पोस्ट में बताया कि न्यूयॉर्क जैसे शहर में रहना कितना महंगा है। उनकी यह पोस्ट वायरल हो गई और हजारों लोगों ने इस पर कमेंट भी किए हैं। जानकारी के मुताबिक मैत्री मंगल भारतीय मूल की हैं और वह गूगल में काम करती हैं और उनका सैलरी पैकेज करीब 1.6 करोड़ रुपए है। उनका दावा है कि अगर आप बड़े शहर में रहते हैं तो 7 फिगर वाला पैकेज भी कम पड़ जाएगा। न्यूयॉर्क में पोडकॉस्ट के साथ मैत्री ने अपने अनुभव साझा किए।

उन्होंने गूगल कंपनी से मिलने वाली रकम और अमेरिका में अपने खर्चों के बारे में बताया कि किस तरह एक मोटी सैलरी भी यहां रहकर खर्चे पूरे करने के लिए काफी नहीं है। अगर आपको न्यूयॉर्क जैसे लग्जरी शहर में रहना है तो बहुत ज्यादा पैसा खर्च करने को तैयार रहना होगा। मैत्री ने खुलासा किया कि गूगल अमेरिका में रहने वाले अपने सॉफ्टवेयर इंजीनियर्स को औसतन 1.6 करोड़ रुपये की सैलरी पैकेज देता है, लेकिन अमेरिका में रहना सस्ता नहीं है।

खास खबर

साउथी ने शुभमन और क्रॉली विवाद को खेल का हिस्सा करार दिया

नई दिल्ली । इंग्लैंड के इंग्लैंड के विशेषज्ञ कौशल सलाहकार व न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेटर टिम साउथी ने कहा है कि लॉर्ड्स टेस्ट के तीसरे दिन जिस प्रकार का विवाद मैदान पर हुआ था वह खेल का ही एक हिस्सा है। तीसरे दिन इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज जैक क्रॉली को समय बर्बाद करते देखकर भारतीय खिलाड़ी नाराज थे। यहां तक कि शांत रहने वाले कप्तान शुभमन गिल भी भड़क गये और क्रॉली से उनकी बहस हो गयी। इस मैच में भारतीय टीम की पहली पारी के बाद के 15 मिनट का खेल शेष था। ऐसे में भारतीय टीम ज्याद से ज्यादा ओवर करने के प्रयास कर रही थी। वहीं क्रॉली समय बेकार करने में लगे थे। जिससे विवाद हो गया साउथी ने इसे खेल का हिस्सा बताया है। साउथी ने कहा, यह खेल का एक हिस्सा है, दिन का अंत करने का एक रोमांचक तरीका। यह एक शानदार सीरीज रही, दोनों टीमों ने अच्छी भावना से अच्छा क्रिकेट खेला। आज दोनों टीमों में अच्छी ऊर्जा थी। तीसरे दिन के अंत में क्रॉली पर जानबूझकर समय बेकार करने का आरोप लगा। इसी कारण भारतीय टीम एक ही ओवर कर पायी। इस मैच में टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने उतरी इंग्लैंड की टीम ने जो रूट के शतक से 387 रन बनाये थे, इसके जवाब में टीम इंडिया ने भी केएल राहुल के शतक के दम पर 387 रन बनाए।

एपिक विक्ट्री क्रिकेट लीग ने उप्र में ट्रायल का जारी किया शेड्यूल

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के युवा क्रिकेटरों को एक अच्छा मंच देने के लिए एपिक विक्ट्री क्रिकेट लीग ने रविवार को अपने आगामी टैलेंट हंट ट्रायल्स के लिए विस्तारित और शेड्यूल एवं नई तारीखों की घोषणा की है। यह जानकारी रविवार को इलाहाबाद न्यूज रिपोर्टर्स क्लब में मीडिया को ईवीसीएल लीग कमिश्नर प्रवीण कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि एपिक विक्ट्री क्रिकेट लीग ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ, मेरठ, गोरखपुर, वाराणसी, और कानपुर जैसे शहरों के महत्वाकांक्षी क्रिकेटरों की अभूतपूर्व रुचि और भारी संख्या में पंजीकरण को देखते हुए नये शेड्यूल का निर्णय लिया है। लीग की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए यह घोषणा की गई है कि इस पहल को शिखर धवन, इरफान पठान, सौरभ तिवारी, कामरान खान, अनुरीत सिंह, परविंदर अवाना और अजीत चंदीला जैसे क्रिकेट के दिग्गजों की उपस्थिति और मार्गदर्शन का सौभाग्य प्राप्त होगा। प्रवीण कुमार के साथ-साथ, रणजी ट्रॉफी के कई अनुभवी और सेवानिवृत्त खिलाड़ी भी इस पहल का हिस्सा होंगे, जो ट्रायल्स से निकलने वाली प्रतिभा की अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन करेंगे। उन्होंने कहा कि ईवीसीएल केवल उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों के लिए ही नहीं बल्कि जम्मू-कश्मीर और पंजाब के खिलाड़ियों के लिए भी एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करेगा। इस लीग में उभरती हुई प्रतिभा और अनुभवी घरेलू क्रिकेटरों का मेल देखने को मिलेगा। जो सीखने और मार्गदर्शन का एक बड़ा अवसर होगा। यह सिर्फ एक टूर्नामेंट नहीं, बल्कि जिंदगी बदलने वाला मंच है।

कृष्णा स्पोर्ट्स क्लब ने 16 टीमों के राष्ट्रीय स्तर के वॉलीबॉल टूर्नामेंट की मेजबानी की

खौर । कृष्णा स्पोर्ट्स क्लब ने एक ऊजार्वान राष्ट्रीय स्तर के वॉलीबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया जिसमें देश भर की 16 टीमों ने भाग लिया। यह टूर्नामेंट एथलेटिक क्षमता, एकता और युवा सशक्तिकरण का उत्सव साबित हुआ जिसने पूरे आयोजन के दौरान भारी भीड़ जुटाई और खेल भावना को बढ़ावा दिया। फाइनल मैच टीम अमृतसर (पंजाब) और टीम बड़ी ब्राह्मणा (जम्मू) के बीच हुआ जहाँ पंजाब ने बेस्ट-ऑफ-थ्री सीरीज में दोनों सेट 25-19 और 25-21 से जीतकर जीत हासिल की जिससे तीसरा सेट अनावश्यक हो गया। पंजाब ने चैंपियनशिप का खिताब जीतने के लिए असाधारण टीम वर्क और कौशल का प्रदर्शन किया।

लॉर्ड्स टेस्ट

इंग्लैंड की आधी टीम पवेलियन लौटी

एजेंसी

नयी दिल्ली । 87 रन के स्कोर पर आकाश दीप ने हैरी ब्रूक को बोल्ड किया था। भारत और इंग्लैंड के बीच एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी का तीसरा टेस्ट लॉर्ड्स स्टेडियम में खेला जा रहा है। रविवार को मैच का चौथा दिन है और दूसरा सेशन जारी है। इंग्लैंड ने दूसरी पारी में 6 विकेट पर 171 रन बना लिए हैं। बेन स्टोक्स और जैमी स्मिथ नाबाद हैं। वॉशिंगटन सुंदर ने जो रूट (40 रन) को बोल्ड करके फिफ्टी पार्टनरशिप ब्रेक की। हैरी ब्रूक (23 रन) को आकाश दीप ने बोल्ड कर दिया। नीतीश रेड्डी ने जैक क्रॉली (22 रन) को कैच कराया। जबकि, मोहम्मद सिराज ने ओली पोप (4 रन) और बेन डकेट (12 रन) को पवेलियन भेजा।

इंग्लिश टीम ने आज 2/0 के स्कोर से खेलना शुरू किया था। पहली पारी में किसी टीम को बढ़त नहीं मिली, इनमें भारत और इंग्लैंड की टीमें एक समान 387-387 के स्कोर पर ऑलआउट हुईं।

भारत के नाम रहा सेशन, 4 विकेट झटके

लॉर्ड्स टेस्ट के चौथे दिन का पहला सेशन भारत के नाम रहा। 24 ओवर के इस सेशन में इंग्लैंड ने 96 रन बनाने में 4 विकेट गंवा दिए। लंच ब्रेक तक इंग्लिश टीम का स्कोर 98/4 रहा। भारतीय टीम से मोहम्मद सिराज ने दो विकेट झटके। आकाश दीप और नीतीश रेड्डी को एक-एक विकेट मिला। आकाश दीप ने हैरी ब्रूक को बोल्ड किया। 22वें ओवर की तीसरी बॉल पर इंग्लैंड का चौथा विकेट गिरा। आकाशदीप की फुल लेंथ बॉल पर हैरी ब्रूक ने स्वीप शॉट खेलने की कोशिश की। लेकिन चूक गए और बॉल जाकर मिडिल स्टंप पर लगी। आकाशदीप के पिछले ओवर में ब्रूक ने लगातार 3 बाउंड्री लगाई थी।

दोनों टीमों की प्लेइंग-11

भारत : शुभमन गिल (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, करुण नायर, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, नीतीश कुमार रेड्डी, वॉशिंगटन सुंदर, आकाश दीप, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज।

इंग्लैंड: बेन स्टोक्स (कप्तान), जैक क्रॉली, बेन डकेट, ओली पोप, जो रूट, हैरी ब्रूक, जैमी स्मिथ (विकेटकीपर), क्रिस वोक्स, ब्रायडन कार्स, जोफ्रा आर्चर और शोएब बशीर।

मैच का स्कोरकार्ड

इंग्लैंड दूसरी पारी 171-6 (49.3 ओवर) बल्लेबाज, **22** रन जैक क्रॉली कॉट, **12** बेन डक कॉट, **04** ओली पोप एलबीडब्ल्यू ,**4 0** जो रूट ,**23** हैरी ब्रुक बोल्ड, **27** बेन स्टोक्स (कप्तान) बल्लेबाजी **08** जेमी स्मिथ, **08** क्रिस वोक्स 5 अतिरिक्त 31 (बोल्ड 25, एलबी 5, विकेट 0, नाबाद 1, आउट 0) कुल 171 (6) विकेट, 49.3 ओवर)

9वीं बार दो टीमों ने बनाये बराबर रन

लॉर्ड्स । लॉर्ड्स में भारत और इंग्लैंड दोनो ने ही पहली पारी में बराबर-बराबर रन बनाये। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुएइंग्लैंड की टीम ने जो रूट के शतक से 387 रन बनाये। इसके बाद भारतीय टीम की ओर से केएल राहुल ने शतक लगाया जिससे भारतीय टीम भी पहली पारी में 387 रन ही बना पायी। कामयाब रही। यह पहली घटना नहीं। क्रिकेट इतिहास पर नजर डालें तो ये नौवीं बार है जब पहली पारी में दोनों टीमों का स्कोर रहा बराबर रहा है। इससे पहले 8 बार दोनो ही टीमों ने बराबर रन बनाये हैं पर दो ही बार ऐसे में मैच का परिणाम निकला है। पहली बार ऐसा 1910 में दक्षिण अफ्रीका वर्सेस इंग्लैंड टेस्ट मैच के दौरान हुआ था ।

पंत के रन आउट पर राहुल ने कहा-'यह हम दोनों के लिए निराशाजनक था'

एजेंसी

लॉर्ड्स । भारत और इंग्लैंड के बीच लॉर्ड्स में खेले जा रहे तीसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत के रन आउट होने पर केएल राहुल ने कहा कि यह हम दोनों के लिए निराशाजनक था। उन्होंने कहा कि कोई भी अपना विकेट इस तरह नहीं गंवाना चाहता। साथ ही राहुल ने बताया कि वह लंच से पहले अपना शतक पूरा करना चाहते थे। ऋषभ पंत उस समय बल्लेबाजी करने आए थे जब भारत ने 107 के स्कोर पर कप्तान शुभमन गिल के रूप में तीसरा विकेट गंवा दिया था। इसके बाद पंत ने राहुल के साथ शतकीय साझेदारी की। दोनों बल्लेबाज मैच के तीसरे दिन अच्छी बल्लेबाजी कर रहे थे, लेकिन लंच से ठीक पहले पंत रन आउट हो गए। पंत ने 122 गेंदों पर 72 रन बनाए थे। केएल राहुल ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि कुछ ओवर पहले पंत से बातचीत हुई थी। मैंने उनसे कहा कि अगर हो सका तो लंच से पहले मैं अपना शतक पूरा कर लूंगा। लंच से पहले बशीर ने आखिरी ओवर फेंका, तो मुझे लगा कि शतक बनाने का अच्छा मौका है, लेकिन, हां, बदकिस्मती से मेरी गेंद सीधे फील्डर के हाथ में चली गई।

न्यूजीलैंड ने चोटिल एलन की जगह कॉनवे को टीम में किया शामिल

एजेंसी

नयी दिल्ली । जिम्बाब्वे में होने वाली टी20 त्रिकोणीय श्रृंखला के लिए न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने विकेटकीपर बल्लेबाज डेवोन कॉनवे को टी20 स्क्वाड में शामिल किया है। उन्होंने फिन एलन की जगह ली है, जो मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) 2025 के दौरान लगी चोट के कारण बाहर हो गए थे। न्यूजीलैंड टीम के मुख्य कोच रॉब वाल्टर ने एक बयान में कहा कि हम फिन के लिए वाकई बहुत दुखी हैं। मैं उनके साथ काम करने और एमएलसी से उनके अच्छे प्रदर्शन को जारी रखने के लिए उत्सुक था, लेकिन दुर्भाग्य से चोटें लग जाती हैं। हम भाग्यशाली हैं कि फिन की जगह डेवोन जैसे अनुभवी खिलाड़ी को टीम में शामिल कर पा रहे हैं। इसके अलावा न्यूजीलैंड ने माइकल ब्रेसवेल, मार्क चैपमैन, ग्लेन फिलिप्स और रचिन रविंद्र की चौकड़ी के अतिरिक्त कवर के रूप में मिच हे, जिमी नीशम और टिम रॉबिन्सन को भी टीम में शामिल किया है। त्रिकोणीय श्रृंखला की शुरूआत कल यानी सोमवार से हो रही है। श्रृंखला का फाइनल मुकाबला 26 जुलाई को खेला जाएगा। न्यूजीलैंड अपना पहला मुकाबला 16 जुलाई को साउथ अफ्रीका से खेलेगी।

पेरिस ओलंपिक के बाद पहली बार डायमंड लीग में नीरज और अरशद में होगी प्रतिस्पर्धा

एजेंसी

सिलेसिया । भारत के नीरज चोपड़ा और पाकिस्तान के अरशद नदीम के बीच 16 अगस्त को पोलैंड के सिलेसिया में होने वाली डायमंड लीग भाला फेंक (डीएल) स्पर्धा में टक्कर होगी। पेरिस ओलंपिक के बाद ये दोनो के बीच पहला मुकाबला होगा और ऐसे में सभी की नजरें इस पर लगी रहेंगी। अरशद ने पेरिस में 92.97 मीटर के शानदार थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जबकि नीरज ने रजत पदक जीता था। नीरज टोक्यो ओलंपिक में स्वर्ण पदक विजेता होने के साथ ही विश्व चैम्पियन भी हैं। चोपड़ा को हालांकि पेरिस में 89.45 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत पदक से संतोष करना पड़ा था। विश्व एथलेटिक्स के एक बयान में कहा गया है कि चोपड़ा और नदीम सिलेसिया डायमंड लीग में पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा में प्रतिस्पर्धा करेंगे। सिलेशिया डायमंड लीग के आयोजकों ने भी नीरज और अरशद के बीच इस मुकाबले की पुष्टि करते हुए कहा कि यह नीरज के लिए पिछली हार का बदला लेने का अच्छा अवसर हो सकता है।

लंदन में विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट में पोलैंड की इगा स्वीटेक जीत के बाद ट्रॉफी के साथ नजर आ रही।

शेफाली के अर्धशतक के बाद भी भारतीय महिला टीम की हारी

एजेंसी

लंदन । शेफाली वर्मा की अर्धशतकीय पारी के बाद भी भारतीय महिला क्रिकेट टीम मेजबान इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें और आखिरी टी20 मैच में हार गयी हालांकि ये सीरीज भारतीय टीम ने 3-2 से जीती। भारतीय टीम ने सीरीज के पहले दो और चौथा मैच जीता जबकि मेजबान टीम ने तीसरा और पांचवां मुकाबला अपने नाम किया। इसी के साथ ही हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में भारतीय टीम इंग्लैंड की धरती पर पहली बार 2 से अधिक मैचों की टी20 सीरीज जीतने में सफल रही है। अंतिम मुकाबले में मेजबान टीम ने टॉस जीतकर भारतीय टीम को बल्लेबाजी के लिए बुलाया। भारतीय टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 167 रन बनाये। इसके बाद मेजबान टीम ने ये लक्ष्य मैच की अंतिम गेंद पर हासिल कर लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम की शुरूआत अच्छी नहीं रही। सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना और जेमीमा रोड्रिग्स शुरूआत में ही आउट हो गयीं। इसेक बाद शेफाली ने 41 गेंदों पर 75 रनों रन बनाकर पारी को संभाला पर अन्य कोई बल्लेबाज टिक नहीं पायी। मेजबान टीम की ओर से 168 के टारगेट का पीछा करते हुए सोफिया डंकले ने 46 जबकि डेनिएल व्याट-हॉज ने 56 रन बनाये। इन दोनो ने पहले विकेट के लिए शतकीय साझेदारी कर 101 रन बनाये। पहले 10 ओवर में ही इंग्लैंड ने तेजी से रन बना लिए पर बीच में विकेट गिरने से मैच रोमांचक हो गया।

बुमराह सबसे अधिक बार शून्य पर आउट होने वाले चौथे भारतीय खिलाड़ी बने

लॉर्ड्स । भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अब तक इंग्लैंड दौरे में रनों के मामले में असफल रहे हैं। बुमराह ने अभी तक इस दौरे में तीन बार बल्लेबाजी की है और तीनो में ही वह अपना खाता नहीं खोल पाये। इस प्रकार बुमराह ने इस सीरीज में शून्य पर आउट होने की हैट्रिक लगायी है। पिछली 7 पारियों में वह 6 बार 0 पर आउट हुए हैं। इसी के साथ उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले बल्लेबाजों की अनचाही सूची में सचिन तेंदुलकर और रोहित शर्मा को भी पछड़ दिया है।

रांची जिला का नियमित प्रथम सुपर स्पीड खो-खो बालक-बालिका का प्रशिक्षण शुरु

एलईबीबी उच्च विद्यालय के प्रांगण में प्रारम्भ

रांची । झारखंड राज्य सुपर स्पीड खो-खो एसोसिएशन से पंजीकृत रांची जिला सुपर स्पीड खो-खो एसोसिएशन के तत्वावधान में खो-खो खेल के विकास हेतु शहर के बीचों-बीच एल.ई.बी.बी.उच्च विद्यालय, राँची के प्रांगण में प्रथम राँची जिला बालक-बालिका सुपर स्पीड खो-खो प्रशिक्षण केंद्र का आज विधिवत उद्घाटन हुआ। यह प्रशिक्षण केंद्र नियमित रूप से इच्छुक प्रशिक्षणार्थियों को अपराह्न साढ़े तीन बजे शाम साढ़े पांच बजे तक मुख्य प्रशिक्षक नितेश कुमार साहू एवं प्रशिक्षक शुभम सिंह के देखरेख में चलेगा। इस प्रशिक्षण केंद्र में आठ वर्ष से सत्रह वर्ष तक के इच्छुक बालक-बालिका प्रशिक्षण के समयानुसार आकर निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन आज मुख्य अतिथि सह एलईबीबी उच्च विधालय,राँची के प्रधानाध्यापक संजय कुमार महतो एवं विशिष्ट अतिथि झारखंड राज्य सुपर स्पीड खो-खो एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय झा ने संयुक्त रूप से नारियल फोड़कर तथा सभी खिलाडियों से परिचय प्राप्त कर किया। आगन्तुकों का स्वागत झारखंड राज्य सुपर स्पीड खो-खो एसोसिएशन के महासचिव विवेक कुमार ने किया, जबकि मंच का संचालन राज्य संघ के कोषाध्यक्ष नितेश कुमार साहु ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन राँची जिला के रेफरी बोर्ड के चेयरमैन संजय कुमार ने किया। इस अवसर पर विधालय के विज्ञान शिक्षक अमित लोहरा, समाजसेवी दीपक मरांडी, खो-खो खेल के विशेषज्ञ सनातन उरांव, अमिका कुमार, निखिल कुमार, अभिषेक कुमार, शुभम सिंह, कौशल कुमार एवं कई गणमान्य खेल प्रेमी उपस्थित थे। इस अवसर पर बालक वर्ग का मैत्रीपूर्ण मैच में बी.एस.पी. उच्च विद्यालय, सेक्टर-2,धुर्वा, रांची ने जिला स्कूल, रांची को कड़े संघर्षपूर्ण मैच में 27-19 अंकों से पराजित किया जबकि बालिका वर्ग में जिला स्कूल, राँची ने एल.ई.बी.बी.उच्च विद्यालय, राँची को आसानी पूर्वक 16-09 अंकों से पराजित किया। आज उद्घाटन के अवसर पर राँची जिले के लगभग अस्सी बालक-बालिका उपस्थित थे। मैच में निर्णायक के रूप में वरीय राष्ट्रीय खिलाड़ी निखिल कुमार, राष्ट्रीय खिलाड़ी सन्नी कुमार, अभिषेक उरांव, शिवम नायक ने अहम योगदान दिए।उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रधानाध्यापक संजय महतो ने उद्बोधन में कहा कि इस प्रशिक्षण केंद्र में प्राप्त सभी खिलाड़ियों को हर संभव सहायता प्रदान करने की घोषणा की।

जेसीआई रांची का जेसी बैडमिंटन प्रीमियर लीग सीजन 2 आयोजित

रांची । जेसीआई रांची ने रविवार 13 जुलाई को ठाकुर विश्वनाथ सहदेव इनडोर स्टेडियम, खेलगांव स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, खेलगांव में आयोजित किया जेसी बैडमिंटन प्रीमियर लीग सीजन 2। इस बैडमिंटन प्रतियोगिता में कुल 12 टीम व कुल 60 लोगों ने हिस्सा लिया। इस एक दिवसीय आयोजन में सिंगल्स और डबल्स के कई बैडमिंटन मुकाबले हुए जिसमें सृजन हेतंसरिया की टीम म्यूचुअल स्मैशर्स ने प्रतियोगिता में जीत दर्ज की। डॉ संजय जैन को बेस्ट प्लेयर के खिताब से नवाजा गया। रनरअप प्लेयर रहे पंकज साबू व रनरअप टीम रही रोशन व जया मोदी की टीम सुपर शटलर। डबल्स गेम के विजेता रहे ऋषभ जालान व विभोर चौधरी की टीम। महिला सिंगलस गेम में प्रिशा जैन विजेता रही व मधु जालान रनरअप रही। इस कार्यक्रम का संचालन जेसी डॉ संजय जैन की अगुवाई में जेसी ऋषभ जैन, ऋषभ जालान, विभोर चौधरी व अग्निश मित्रा ने सफलता पूर्वक किया। कार्यक्रम में अध्यक्ष प्रतीक जैन, मोहित वर्मा, आनंद धानुका, विजय पटेल, सौरभ साबू, सिद्धार्थ जयसवाल, अभिषेक जालान, तरुण अग्रवाल, अभिषेक जैन, साकेत अग्रवाल, संकेत सरावगी व अन्य उपस्थित थे।

पोलैंड की इगा स्वियातेक ने रचा इतिहास, पहली बार जीता महिला एकल खिताब

एजेंसी

लंदन। पोलैंड की दिग्गज टेनिस खिलाड़ी इगा स्वियातेक ने शनिवार को विम्बलडन 2025 के महिला एकल फाइनल में इतिहास रचते हुए अपने करियर का पहला विम्बलडन खिताब जीत लिया है। 24 वर्षीय स्वियातेक ने अमेरिकी खिलाड़ी अमांडा एनिसिमोवा को महज 26 मिनट में 6-0, 6-0 से हराकर टेनिस जगत में एक नया अध्याय जोड़ दिया। यह जीत न केवल स्वियातेक के लिए भावनात्मक रूप से खास रही, बल्कि उन्होंने पोलैंड की पहली महिला खिलाड़ी बनने का गौरव भी हासिल किया है जिन्होंने विम्बलडन का खिताब अपने नाम किया है।

स्वियातेक की ऐतिहासिक उपलब्धियां

यह इगा स्वियातेक का छठा ग्रैंड स्लैम खिताब है। इससे पहले वे चार बार फ्रेंच ओपन और एक बार यूएस ओपन जीत चुकी हैं। खास बात यह है कि उन्होंने अब तक खेले सभी छह ग्रैंड स्लैम फाइनल मुकाबले जीते हैं, यानी उनका फाइनल में जीत का रिकॉर्ड शतप्रतिशत है।

अमांडा एनिसिमोवा पूरी तरह बिखरीं

23 वर्षीय अमेरिकी खिलाड़ी अमांडा एनिसिमोवा के लिए यह फाइनल किसी दुःस्वप्न से कम नहीं रहा। वे पूरे मुकाबले में एक भी गेम नहीं जीत सकीं। स्वियातेक के आक्रामक अंदाज और बेजोड़ नियंत्रण ने उन्हें कोर्ट पर टिकने नहीं दिया। इस तरह की एकतरफा जीत विम्बलडन जैसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के फाइनल में विरले ही देखी जाती है।

क्ले से ग्रास तकः स्वियातेक का सफर

स्वियातेक को अब तक क्ले कोर्ट स्पेशलिस्ट माना जाता था, खासकर राफेल नडाल की तरह। लेकिन इस बार उन्होंने ग्रास कोर्ट पर भी अपनी बादशाहत साबित कर दी है। अब वे हर प्रमुख सर्फेस पर ग्रैंड स्लैम जीतने वाली चुनिंदा खिलाड़ियों में शामिल हो चुकी हैं। जैसे ही स्वियातेक ने मैच का अंतिम पॉइंट जीता, उन्होंने भावुक होकर कोर्ट पर बैठकर जीत का जश्न मनाया। यह क्षण टेनिस प्रेमियों के लिए लंबे समय तक यादगार रहेगा। उल्लेखनीय है कि महिला प्रोफेशनल टेनिस की शुरूआत 1926 में हुई थी, और 99 वर्षों बाद 2025 में, पोलैंड की किसी महिला खिलाड़ी ने पहली बार विम्बलडन ट्रॉफी उठाई। यह उपलब्धि खुद में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

खेल मंत्री मांडविया ने गांधीनगर में किया फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल का नेतृत्व

एजेंसी

नई दिल्ली। 'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल' का 31वां संस्करण रविवार सुबह देशभर में आयोजित किया गया, जिसमें केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने गुजरात के गांधीनगर में 500 से अधिक प्रतिभागियों के एक समूह का नेतृत्व किया। इस सप्ताह सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) के साथ साझेदारी में आयोजित इस साइकिलिंग अभियान में देश भर के 7000 से अधिक स्थानों पर फिटनेस की डोज, आधा घंटा रोज के संदेश को मजबूत करते हुए 3000 नमो फिट इंडिया साइक्लिंग क्लबों ने भाग लिया। युवा मामले और खेल मंत्रालय की ओर से जारी विज्ञप्ति में डॉ. मांडविया ने कहा कि "फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल" अब एक शक्तिशाली राष्ट्रव्यापी पहल बन गई है, जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के फिट इंडिया मिशन को पूरी ताकत से आगे बढ़ा रही है। यह वास्तव में एक ऐसी श्रृंखला बन गई है जो न केवल फिटनेस के बारे में है, बल्कि राष्ट्रीय परिवर्तन का भी प्रतीक है। आज 7000 से ज्यादा जगहों पर हमारे युवाओं ने इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया है। डॉ. मांडविया ने भारतीय युवा महिला हैंडबॉल टीम से भी बातचीत की ।

भगवान शिव और मां पार्वती के संवाद की साक्षी है अमरनाथ गुफा

हर साल सावन के महीने भगवान शिव के स्वयंभू हिमलिंग के दर्शन होते हैं। भक्त कई किलोमीटर की कठिन पैदल यात्रा करके इस पवित्र गुफा तक पहुंचते हैं। वहीं बर्फ से बने शिवलिंग के दर्शन से व्यक्ति अपने जीवन को धन्य मानते हैं।

अमरनाथ यात्रा का नाम सुनते ही हमारे मन में बर्फ के बीच स्थित भगवान शिव की पवित्र गुफा उभर आती है। वहीं इस यात्रा में हर साल लाखों की संख्या में भक्त शामिल होते हैं। कहा जाता है कि जो भी श्रद्धालु सच्चे मन से इस यात्रा पर जाते हैं, उनकी हर मुराद पूरी होती है और जीवन में सुख-शांति और समृद्धि का वास होता है। अमरनाथ यात्रा की यह गुफा जम्मू-कश्मीर के हिमालय में करीब 12,756 फीट की ऊंचाई पर मौजूद हैं।

बता दें कि हर साल सावन के महीने भगवान शिव के स्वयंभू हिमलिंग के दर्शन होते हैं। भक्त कई किलोमीटर की कठिन पैदल यात्रा करके इस पवित्र गुफा तक पहुंचते हैं। वहीं बर्फ से बने शिवलिंग के दर्शन से व्यक्ति अपने जीवन को धन्य मानते हैं। बताया जाता है कि भगवान शिव ने मां पार्वती को अमरत्व का रहस्य बताया था। तब यही गुफा भगवान शिव और मां पार्वती की संवाद की साक्षी बनी थी। इसलिए इस स्थान को अमरनाथ कहा जाता है। भगवान शिव में आस्था रखने वाले लोग जीवन में एक बार इस यात्रा को जरूर करना चाहते हैं, जिससे उनके पाप मिट जाएं और मोक्ष मिल सके।

इतिहास

अमरनाथ गुफा की खोज को लेकर कई मत हैं। इतिहास के मुताबिक 1850 में बूटा मलिक नामक गड़रिए ने इस गुफा की खोज की थी। पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब कश्मीर घाटी पानी में डूब गई थी और झील बन गई थी। तब ऋषि कश्यप ने प्राणियों की रक्षा के लिए इस जल को कई नदियों और छोटे-छोटे जल स्त्रोतों से आगे प्रवाहित करने का काम किया। इस दौरान ऋषि भृगु हिमालय यात्रा पर थे, इस दौरान उनको अमरनाथ गुफा और शिवलिंग दिखाई दिया। तब से ही अमरनाथ में भगवान शिव की पूजा की जाने लगी।

महत्व

धार्मिक पुराणों के मुताबिक अमरनाथ गुफा वह जगह है, जहां भगवान शिव ने मां पार्वती को अमरकथा सुनाई थी। अमर कथा सुनने के बाद भी जो जीव जीवित रह जाता है, वह अमर हो जाता है। इसलिए भगवान शिव ने यहां आकर सब कुछ त्याग दिया था और फिर मां पार्वती को कथा सुनाई थी। बताया जाता है कि भगवान शिव ने अपना वाहन नंदी, नागों और गणों को भी दूर भेज दिया। जिससे कोई इस रहस्य को सुन न सके। लेकिन इस दौरान कबूतर के एक जोड़े ने इस कथा को सुन लिया और तभी से माना जाता है कि वह आज भी अमर हैं। इस कथा के कारण इस गुफा को अमरनाथ गुफा कहा जाता है।

अमरनाथ यात्रा की इतिहास

बता दें कि इस साल अमरनाथ यात्रा की शुरुआत 03 जुलाई से हो रही है और यह 31 अगस्त तक चलेगी। वहीं देशभर से हजारों की संख्या में भक्त इस पवित्र यात्रा में शामिल होते हैं। इस दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। जिससे कि यात्रा निर्बाध रूप से संपन्न हो सके।

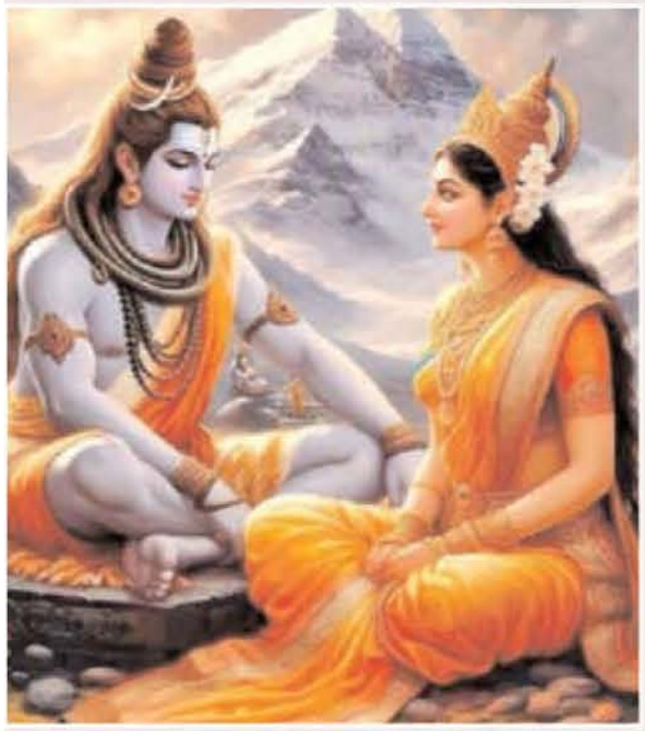

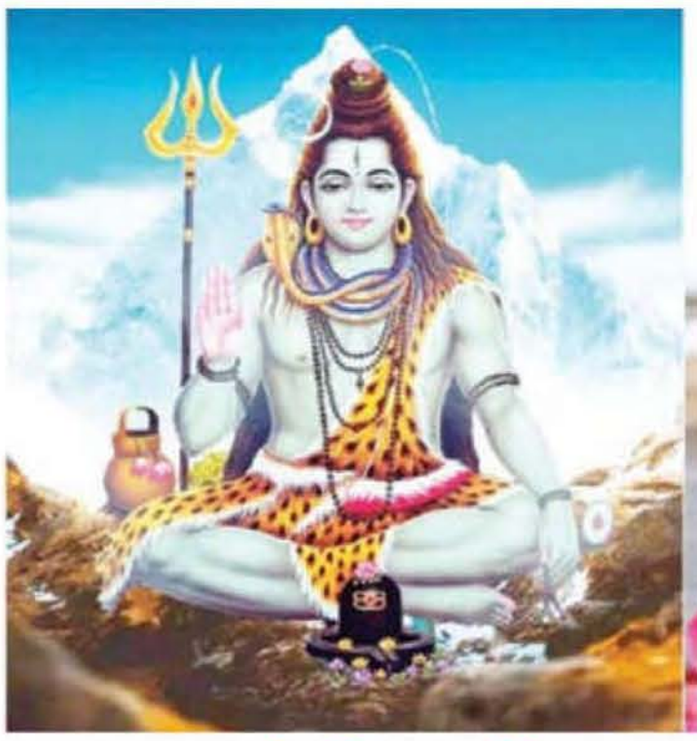

सावन में शिवलिंग की पूजा कैसे करें?

जान लें सही विधि, नियम और पूजा सामग्री

सावन का महीना देवों के देव महादेव को प्रसन्न करने और उनकी कृपा पाने के लिए सबसे खास होता है. हिंदू कैलेंडर के मुताबिक सावन का महीना साल का पांचवां महीना होता है. धार्मिक ग्रंथों और शास्त्रों के अनुसार, यह महीना भगवान शिव को सबसे प्रिय माना गया है. सावन के महीने में भगवान शिव की विधि-विधान से पूजा करने और जलाभिषेक करने का विशेष महत्व होता है. धार्मिक मान्यता है कि सावन के महीने में माता पार्वती ने कठोर तपस्या करते हुए भगवान शिव को पति के रूप में पाया था.

सावन के महीने में भगवान शिव की पूजा विशेष फलदायी मानी गई है. मान्यता है कि जो भक्त पूरे सावन के महीने में शिव जी की पूजा करता है और शिवलिंग का जलाभिषेक करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं. वैसे तो सावन का हर दिन शिवजी की पूजा के लिए शुभ है, लेकिन सावन में सोमवार के दिन पूजा करने से विशेष फलों की प्राप्ति होती है.

सावन के दौरान कई भक्त घर पर शिवलिंग की स्थापना कर उसकी पूजा करते हैं. घर में शिवलिंग की पूजा के लिए खास नियम और विधि बताई गई है. अगर आप भी सावन के पूरे महीने में यहां बताई गई विधि से शिवलिंग की पूजा करते हैं तो इससे आपके समस्त कष्ट दूर हो सकते हैं और जीवन में समृद्धि बनी रहती है. ऐसे में आइए आपको बताते हैं सावन के महीने में किस तरह से शिव उपासना की जाए जिससे शिव कृपा का लाभ मिल सके.

सावन में शिवलिंग पूजा का महत्व

हिंदू कैलेंडर के अनुसार सावन को एक बेहद पूजनीय और पावन महीना माना जाता है जो विशेष रूप से भगवान शिव की आराधना के लिए समर्पित होता है. इस शुभ महीने के दौरान भक्त समृद्धि, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक विकास का आशीर्वाद पाने के लिए विभिन्न अनुष्ठान करते हैं. सावन में किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठानों में से एक है शिवलिंग की पूजा. धार्मिक मान्यता है कि शिवलिंग की पूजा का विशेष लाभ मिलते हैं और भक्तों की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है.

शिव पुराण में सावन के दौरान शिवलिंग की पूजा का महत्व माना गया है क्योंकि सावन हिंदू चंद्र कैलेंडर का पांचवां महीना होता है. ऐसा माना जाता है कि इस महीने के दौरान, ब्रह्मांड शिव में दिव्य ऊर्जा भर जाती है, जिससे यह शिवलिंग की पूजा के लिए आदर्श समय बताया गया है. सावन चातुर्मास के दौरान पड़ता है और इस दौरान जगत पालनहार भगवान विष्णु सृष्टि का कार्यभार भगवान शिव को सौंप देते हैं. इसी वजह से जो भी भक्त सावन में शिवलिंग की पूजा करता है, उसके जीवन की हर परेशानी दूर हो जाती है.

घर में कौन से शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए?

सावन में घर में शिवलिंग की पूजा करें तो आपको घर में कौन सा शिवलिंग रखना चाहिए यह भी बेहद महत्वपूर्ण होता है. ज्योतिष के अनुसार, घर में पारद शिवलिंग रखना सबसे शुभ माना गया है. इसके अलावा आप स्फटिक का शिवलिंग भी घर में रख सकते हैं.

अगर आप नर्मदा नदी के शिवलिंग की पूजा करते हैं तो यह सबसे ज्यादा शुभ होता है. शिवलिंग भगवान शंकर के निराकार रूप का प्रतिनिधित्व करता है और उनके अनंत स्वरूप का प्रतीक भी माना गया है, इसलिए कुछ विशेष प्रकार के शिवलिंग की ही पूजा घर में करने की सलाह दी जाती है.

सावन शिवलिंग पूजा सामग्री

अगर आप घर में शिवलिंग की पूजा या अभिषेक करने करने जा रहे हैं, तो आपको कुछ खास सामग्रियों की जरूरत होती है. आइए इनके बारे में जानें -बेलपत्र, भांग, धतूरा, शमी के पत्ते, बिल्व पत्र, चंदन का लेप, आक के फूल, सफेद फूल, कमल, मौसमी फल, शहद, शक्कर, चीनी, गंगाजल, गाय का दूध, अगरबत्ती, कपूर, घी का दीपक, धूप, दीप, गंध, नैवेद्य, प्रसाद के लिए मिठाई, आचमन के लिए जल का पात्र.

सावन में शिवलिंग की पूजा विधि

धार्मिक मान्यता ह कि शिवलिंग की पूजा हमेशा विधि-विधान से की जानी चाहिए, इससे आपके जीवन में खुशहाली बनी रहती है. शिवलिंग के पूजा के लिए आपका तन और मन दोनों पवित्र होना चाहिए. सावन में शिवलिंग की पूजा करने की विधि नीचे बताई गई है-

सावन में शिवलिंग का पूजा करने के लिए सबसे पहले शिवलिंग का अभिषेक करें. इसके लिए दूध, दही, शहद और गंगाजल से शिवलिंग को स्नान कराएं. जब भी शिवलिंग का अभिषेक करें, उन्हें जल से भी स्नान कराना चाहिए.

शिवलिंग को स्नान कराने के लिए तांबे के लोटे में जल भरकर जलहरी पर चढ़ाएं. सबसे पहले शिवलिंग के चारों तरफ बनी जलहरी में जल दाहिनी तरफ से जल चढ़ाएं.

मान्यता के अनुसार, यह स्थान गणपति बप्पा का माना जाता है और हमेशा जलाभिषेक इसी स्थान से शुरू करना चाहिए. जलहरी के बाद इसके बाईं ओर जल चढ़ाएं जहां कार्तिकेय का निवास माना गया है. इसके बाद आप शिवलिंग के बीच में जल चढ़ा सकते हैं.

अगर आप शिवलिंग की पूजा घर में कर रहे हैं तो ध्यान रखें कि हमेशा जलाभिषेक बैठकर ही करें. घर में शिवलिंग की पूजा के बाद आप भगवान शिव की आरती करें और प्रसाद चढ़ाएं.

अगर आप मंदिर में शिवलिंग की पूजा करें तो कभी भी शिवलिंग की पूरी परिक्रमा न करें. साथ ही ध्यान रहे कि कभी भी जलहरी को लांगना नहीं चाहिए.

शिवलिंग का जलाभिषेक करने के बाद उसपर चंदन का तिलक लगाएं और उसके बाद बेलपत्र, फूल-माला, भांग-धतूरा आदि चढ़ाएं. शिवलिंग की पूजा के समय उसके आस-पास की जगह खाली रखनी चाहिए, जिससे जल सीधे ही जलहरी से नीचे एक प्रवाह में बहे.

सावन में शिव पूजा के नियम

1. इन चीजों का करें त्याग- सावन के शुरू होते ही तामसिक चीजों जैसे मांस, शराब, नशीले पदार्थ, लहसुन, प्याज आदि का सेवन नहीं करना चाहिए. सावन में पूरे महीने सात्विक भोजन करना चाहिए. पूजा से पहले स्नान करके साफ कपड़े पहनने चाहिए.

2. शिवलिंग पर ये चीजें न चढ़ाएं- महादेव की पूजा में तुलसी के पत्ते, हल्दी, केतकी का फूल, सिंदूर, शंख, नारियल आदि चीजों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. ये सभी चीजें शिव पूजा में वर्जित मानी गई हैं.

3. इन दिनों पर व्रत रखना है शुभ- सावन के सोमवार, प्रदोष व्रत और शिवरात्रि के दिन व्रत रखकर भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए. ये तीनों ही दिन शिव जी की कृपा पाने के लिए सबसे विशेष माने गए हैं.

4. शिव जी मंत्रों का जाप करें- सावन में सामान्य पूजा के दौरान आप ओम नमः शिवाय मंत्र का जाप कर सकते हैं. आप शिव चालीसा पढ़कर भी भगवान शिव की आरती कर सकते हैं. आरती करने से पूजा की कमियां दूर हो जाती हैं.

5. शिवलिंग के आकार का रखें ध्यान- ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, घर में स्थापित किए जाने वाले शिवलिंग का आकार हमेशा छोटा ही होना चाहिए. घर में अंगूठे के आकार का शिवलिंग स्थापित करना सबसे उत्तम है. इसके अलावा शिवलिंग अकेले नहीं रखना चाहिए. उसके साथ में नंदी या शिव परिवार की फोटो जरूर रखें.

6. जलधारा युक्त शिवलिंग- शास्त्रों के मुताबिक, शिवलिंग से हमेशा सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. उस ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित करने के लिए ही शिवलिंग पर जल चढ़ाया जाता है. शिवलिंग की ऊर्जा को शांत रखने के लिए जलधारा होना जरूरी है.

7. इस दिशा में रखें शिवलिंग - घर में शिवलिंग की स्थापना ऐसे करें कि जलधार उत्तर दिशा की ओर रहे. वहीं, घर में हमेश एक शिवलिंग की ही स्थापना करना चाहिए घर में एक से ज्यादा शिवलिंग की स्थापन करना अशुभ माना जाता है.

कब से शुरू हो रहा पवित्र माह सावन?

हिंदू पंचांग के मुताबिक, इस बार सावन 11 जुलाई से शुरू हो रहा है, जो 9 अगस्त तक चलेगा यानी सावन का अंतिम दिन 9 अगस्त है। 10 जुलाई को आषाढ़ पूर्णिमा है, जो 10 जुलाई की रात 01.36 बजे शुरू होगा और 11 जुलाई की रात 02.06 बजे तक रहेगा। इसके बाद सावन या कहें श्रावण माह की प्रतिपदा तिथि लगेगी। सावन माह की प्रतिपदा तिथि 11 जुलाई की रात 11.07 बजे शुरू होगी, जो 12 जुलाई की रात 02.08 बजे खत्म होगी। चूंकि हिंदू धर्म में शिव पूजा निशित काल में करने का विधान है, ऐसे में 11 जुलाई को ही सावन का आरंभ माना जाएगा।

इस बार 4 सोमवार व्रत पड़ेंगे, जो पहला 14 जुलाई, दूसरा 21 जुलाई, तीसरा 28 जुलाई और चौथा सोमवार 4 अगस्त को रखा जाएगा।

सोमवार व्रत के लाभ

सावन में सोमवार के व्रत का विशेष महत्व है, जिसके बारे में शिव पुराण में भी बताया गया है। माना जाता है कि जो शिव भक्त श्रद्धा और नियम से सावन के सभी सोमवार व्रत रखते हैं, उन्हें भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है। सोमवार व्रत करने से जातक के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आती है। साथ ही ग्रहों की प्रतिकूल दशा में भी सुधार आता है।

सावन में इन राशियों की किस्मत चमकेगी, पैसों की कमी होगी दूर

सावन का महीना भगवान शिव का बहुत ही प्रिय माना जाता है। इस माह में शिवजी की पूजा, आराधना और भक्ति से शुभ फल मिलते हैं। लोग अलग-अलग तरह से इस महीने में भोलेनाथ की भक्ति करते हैं और उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। सावन के दौरान सोमवार के व्रत का विशेष महत्व होता है। शिवलिंग पर जल चढ़ाना, कांवड़ यात्रा में जाना, और सावन के व्रत-त्योहारों का पालन करना इस माह की खास परंपराएं हैं। सावन का पवित्र माह कई राशियों के लिए शुभ परिणाम लेकर आता है। आइए जानते हैं सावन में किन राशियों की किस्मत चमकेगी और उन्हें क्या लाभ मिल सकते हैं।

मेष राशि

मेष राशि वालों के लिए सावन का महीना शुभ और फलदायी रहेगा। इस समय आपके कई रुके हुए काम बन सकते हैं। मेहनत का फल मिलेगा और तरक्की के अवसर मिलेंगे। नौकरी में लंबे समय से चल रही कठिनाइयों का समाधान होगा। मेहनत के अनुसार सफलता मिलने की संभावना बढ़ेगी।

कर्क राशि

कर्क राशि के जातकों के लिए सावन का महीना बहुत ही शुभ रहेगा। इस माह में नए रास्ते खुलेंगे और आपके कई नए विचार सफल होंगे। सुख-समृद्धि में वृद्धि होगी। आप अपने जीवन में कुछ नए फैसले लेकर आगे बढ़ेंगे। यह समय आपके लिए भाग्यशाली साबित होगा।

सिंह राशि

सिंह राशि वालों के लिए सावन का महीना मान-सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा लेकर आएगा। समाज में आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके नए कार्यों में लाभ होगा। सेहत भी बेहतर रहेगी। साथ ही आपके प्रेम जीवन में भी सुधार आएगा और जीवन साथी से भावनात्मक जुड़ाव मजबूत होगा।

मकर राशि

मकर राशि के लिए सावन का महीना भगवान शिव और शनि देव की कृपा से फलदायक रहेगा। इस समय बिजनेस या काम में उन्नति के कई अवसर मिलेंगे। दान-पुण्य के कार्यों में खुद को व्यस्त रखें क्योंकि यह आपके भाग्य को और मजबूत करेगा।

कुंभ राशि

कुंभ राशि वालों पर भी सावन में भोलेनाथ और शनि देव की विशेष कृपा रहेगी। आपको अपनी वाणी में सावधानी रखनी होगी और किसी से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। कटु शब्दों से बचें। आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी और जीवन की परेशानियों का अंत होगा।

सावन का महीना धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस माह में भक्ति, पूजा और दान से जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। सभी राशियों को सावन के इस पावन माह में भगवान शिव की आराधना करनी चाहिए और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।

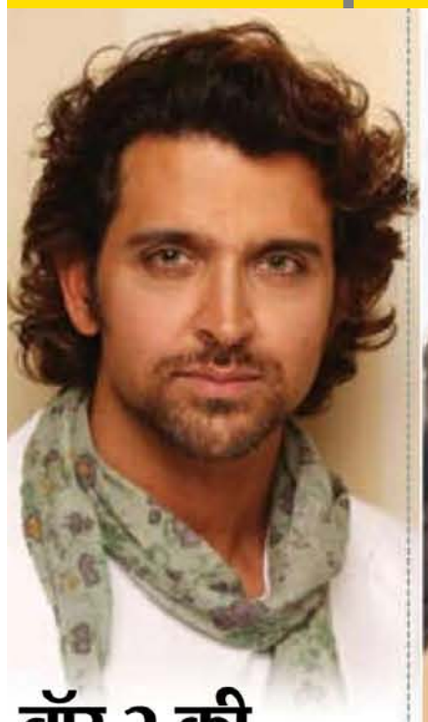

वॉर 2 की शूटिंग पूरी होने पर भावुक हुए ऋतिक रोशन

फिल्म वॉर 2 की शूटिंग पूरी हो गई है। इस फिल्म में ऋतिक रोशन एक बार फिर कबीर के रूप में वापसी कर रहे हैं। उनके अलावा फिल्म में साउथ सुपरस्टार जूनियर एनटीआर और अभिनेत्री कियारा आडवाणी भी हैं। फिल्म की शूटिंग पूरी होने पर ऋतिक रोशन भावुक महसूस कर रहे हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर किया है। ऋतिक रोशन ने अपने एक्स (पूर्व में ट्विटर) अकाउंट से आज मंगलवार को एक पोस्ट शेयर किया है। शूटिंग पूरी होने पर टीम ने केक काटा है। इसके साथ ऋतिक रोशन ने लिखा है, फिल्म वॉर 2 के लिए कैमरा बंद होने के बाद मिली-जुली भावनाएं महसूस हो रही हैं। 149 दिनों तक लगातार रोलिंग, एक्शन, डांस, ब्लड, पसीना, चोटें... और इस सबकी कीमत वसूल हुई है!

जूनियर एनटीआर और कियारा को कहा शुक्रिया

ऋतिक ने पोस्ट में जूनियर एनटीआर को टैग करते हुए लिखा है, सर, आपके साथ काम करना और साथ मिलकर कुछ विशेष बनाना मेरे लिए सम्मान की बात है। वहीं कियारा आडवाणी को टैग करके लिखा है, मैं बहुत उत्साहित हूं कि दुनिया आपके घातक पक्ष को देखे, आपके साथ स्क्रीन साझा करना शानदार अनुभव रहा।

अगस्त में रिलीज होगी फिल्म

ऋतिक रोशन ने आगे लिखा है, मैं बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं कि आप सभी आदि और अयान के कमाल के सिनेमाई विजन को देखें। वॉर 2 के सभी कलाकारों और क्रू को, अपनी प्रतिभा को साझा करने और हर एक दिन अपना बेस्ट देने के लिए तहेदिल से शुक्रिया। आखिर में, कबीर के शूटिंग का खत्म होना कहना हमेशा कड़वा-मीठा अनुभव होता है। मुझे फिर से खुद जैसा महसूस करने में कुछ दिन लगेंगे। अब 14 अगस्त, 2025 को आप सभी के सामने अपनी फिल्म पेश करने की यात्रा पर निकल पड़े हैं।

स्पाई थ्रिलर फिल्म है वॉर 2

यह फिल्म साल 2019 में आई ऋतिक रोशन की फिल्म वॉर का ही सीक्वल है। अयान मुखर्जी ने सीक्वल का निर्देशन किया है। इसे यशराज फिल्म्स के बैनर तले आदित्य चोपड़ा प्रोड्यूस कर रहे हैं। यह स्पाई थ्रिलर फिल्म है। तेलुगु में वॉर 2 के डिस्ट्रीब्यूशन राइट्स पर नागा वामसी ने हासिल किए हैं।

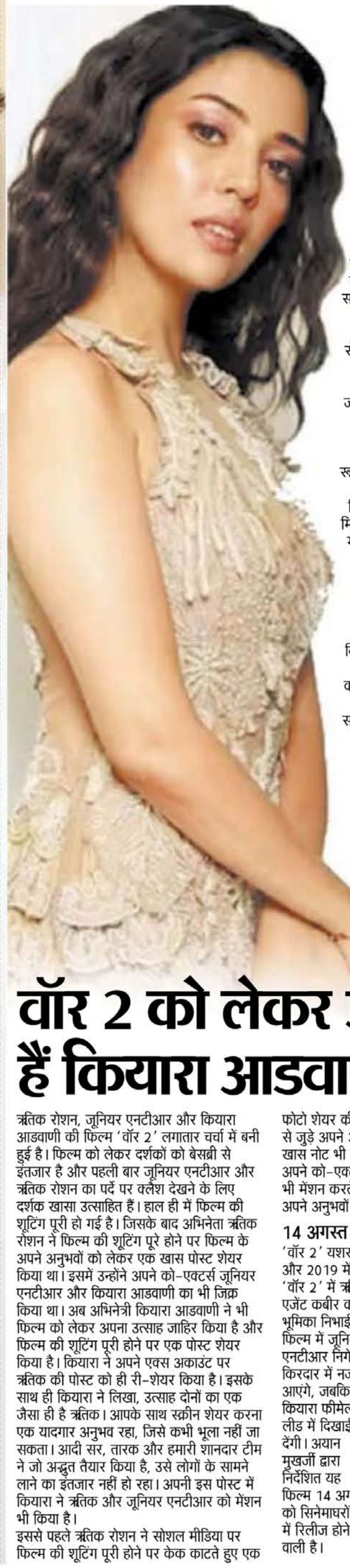

बिना काम के 1 साल घर बैठी रहीं, इंडस्ट्री में एक्टर्स मदद नहीं करते...

एक्ट्रेस और कंटेंट क्रिएटर बरखा सिंह ने डिजिटल और फिल्म इंडस्ट्री में अपनी लगातार पहुंच के साथ बड़ा नाम बनाया है। वह फेमस वेब सीरीज क्रिमिनल जस्टिस 4 में पंकज त्रिपाठी के साथ लोगों का दिल जीत रही हैं। हालांकि, इंडस्ट्री के कई एक्टर्स की तरह, बरखा भी परेशान करने वाले अनुभवों का शिकार हुई हैं, जिनमें से एक कास्टिंग काउच से जुड़ा था, जो चौंकाने वाला था। इसके साथ ही, एक्ट्रेस ने नवभारत टाइम्स ऑनलाइन के साथ अपने करियर की जर्नी भी शेयर की है। बरखा सिंह ने एक घटना के बारे में बताया जिसमें एक दिन उनके इनबॉक्स में एक ईमेल आया था। हालांकि, उन्होंने ये भी कहा कि उन्हें कभी भी व्यक्तिगत रूप से ऐसे ऑफर्स का सामना नहीं करना पड़ा, फिर आगे कहा कि उन्हें एक बार एक साउथ फिल्म में रोल ऑफर करने के लिए एक ईमेल मिला था, जिसमें 'समझौता' करने की मांग की गई थी, लेकिन किसी का नाम नहीं बताया गया था।

बरखा सिंह के साथ कास्टिंग काउच

बरखा ने कहा, किसी ने इसे मेरे ईमेल में डाल दिया। मुझे लगता है कि यह साउथ फिल्म इंडस्ट्री के लिए था, और मेरे पास सबूत है, जहां उसने कहा था, इतने सारे शूटिंग के दिनों की जरूरत है और जरूरी चीजें कम से कम 36 होनी चाहिए, समझौता करना जरूरी है। आप इसे लिखित में दे रहे हैं, इसका मतलब है कि आप इससे बहुत सहमत हैं। नाम नहीं डाला कि किसके साथ समझौता किया जाएगा।

घर में एक्टिंग से कोई नाता नहीं

इसी के साथ बरखा ने करियर के बारे में बात करते हुए बताया कि उनके घर में एक्टिंग से दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं है। कोई भी इस बैकग्राउंड से नहीं आता है। इसी इंटरव्यू में एक्ट्रेस ने ये भी कहा कि इंडस्ट्री में भले आपके दोस्त हों लेकिन वो आगे बढ़ने में कुछ खास मदद नहीं करते।

इंडस्ट्री में लोग नहीं करते मदद

उन्होंने कहा, गजराव राव से मैंने पूछा तो उन्होंने बताया था कि कहां जाकर ऑडिशन देना है लेकिन फैक्ट ये है कि एक्टर्स आपकी मदद नहीं करते हैं। ऑप कॉम्पटिशन में नहीं भी हो तो वो आपको आगे बढ़ने में मदद नहीं करते हैं। कुछ कुछ कर भी देते हैं लेकिन ज्यादा लोग हवा में बोलते हैं बस, मदद नहीं करते। एक साल घर बैठकर मैं इतजार करती रही। फिर धीरे-धीरे चीजें समझ आईं।

बरखा सिंह के व्लॉग्स

अभिनय के अलावा, बरखा एक फेमस ट्रैवल व्लॉगर और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर भी हैं, जिन्होंने कैडबरी, अमेजन और कोका-कोला जैसे ब्रांडों के साथ सहयोग किया है। उन्होंने माधुरी दीक्षित की फिल्म मजा मा में भी अहम रोल किया था, जिसमें गजराज राव, ऋत्विक भौमिक, सृष्टि श्रीवास्तव और कई कलाकार थे।

वॉर 2 को लेकर उत्साहित हैं कियारा आडवाणी

ऋतिक रोशन, जूनियर एनटीआर और कियारा आडवाणी की फिल्म 'वॉर 2' लगातार चर्चा में बनी हुई है। फिल्म को लेकर दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है और पहली बार जूनियर एनटीआर और ऋतिक रोशन का पर्दे पर क्लैश देखने के लिए दर्शक खासा उत्साहित हैं। हाल ही में फिल्म की शूटिंग पूरी हो गई है। जिसके बाद अभिनेता ऋतिक रोशन ने फिल्म की शूटिंग पूरे होने पर फिल्म के अपने अनुभवों को लेकर एक खास पोस्ट शेयर किया था। इसमें उन्होंने अपने को-एक्टर्स जूनियर एनटीआर और कियारा आडवाणी का भी जिक्र किया था। अब अभिनेत्री कियारा आडवाणी ने भी फिल्म को लेकर अपना उत्साह जाहिर किया है और फिल्म की शूटिंग पूरी होने पर एक पोस्ट शेयर किया है। कियारा ने अपने एक्स अकाउंट पर ऋतिक की पोस्ट को ही री-शेयर किया है। इसके साथ ही कियारा ने लिखा, उत्साह दोनों का एक जैसा ही है ऋतिक। आपके साथ स्क्रीन शेयर करना एक यादगार अनुभव रहा, जिसे कभी भूला नहीं जा सकता। आदी सर, तारक और हमारी शानदार टीम ने जो अद्भुत तैयार किया है, उसे लोगों के सामने लाने का इंतजार नहीं हो रहा। अपनी इस पोस्ट में कियारा ने ऋतिक और जूनियर एनटीआर को मेंशन भी किया है।

इससे पहले ऋतिक रोशन ने सोशल मीडिया पर फिल्म की शूटिंग पूरी होने पर केक काटते हुए एक फोटो शेयर की थी। इसके साथ ही उन्होंने फिल्म से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करते हुए एक खास नोट भी लिखा था। इसमें उन्होंने फिल्म के अपने को-एक्टर्स कियारा, जूनियर एनटीआर को भी मेंशन करते हुए उनके साथ काम करने के अपने अनुभवों को जाहिर किया था।

14 अगस्त को रिलीज होगी 'वॉर 2'

'वॉर 2' यशराज के स्पाई यूनिवर्स का हिस्सा है और 2019 में आई फिल्म 'वॉर' का सीक्वल है। 'वॉर 2' में ऋतिक ने पहली फिल्म की तरह ही रॉ एजेंट कबीर की भूमिका निभाई है। फिल्म में जूनियर एनटीआर निगेटिव किरदार में नजर आएंगे, जबकि कियारा फीमेल लीड में दिखाई देंगी। अयान मुखर्जी द्वारा निर्देशित यह फिल्म 14 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

एक बार फिर साथ काम करेंगे इमरान हाशमी और हिमेश रेशमिया

हिमेश रेशमिया और इमरान हाशमी की जोड़ी ने बॉलीवुड को कई बेहतरीन गाने और थ्रिलर फिल्में दीं हैं। अब यह जोड़ी एक बार फिर गनमास्टर जी9 में साथ में काम करने को तैयार हैं। फिल्म के निर्माताओं ने बुधवार को इसका टीजर रिलीज किया है। इस खबर से फैंस उत्साहित हैं। फिल्म निर्माता दीपक मुकुट ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में देखा जा सकता है कि एक रहस्यमई हाथ एक दूध भरी बाल्टी से निकलता है। इस दौरान इमरान हाशमी कहते हैं। मुझसे मचमच किया तो चलेगा। गलती से परिवार को छुआ तो याद रखना। धंधे से दूध वाला हूं, बंदा बारूद वाला हूं।

2026 में रिलीज होगी फिल्म

इस वीडियो के कैप्शन में लिखा है दूध से बारूद तक, सब्जी से गुंडा तक, गोली से पीटने तक, गनमास्टर जी9 तबाही के लिए तैयार है। टीम घातक है। दीपक मुकुट, नर मुकुट, सोहम रॉकस्टार एंटरटेनमेंट, इमरान हाशमी, आदित्य दत्त और हिमेश रेशमिया को वापस लाकर खुश है। इनके साथ जेनेलिया देशमुख और अपारशक्ति खुराना हैं। गनमास्टर जी9 सिनेमाघरों में 2026 को आएगी।

इमरान हाशमी और हिमेश ने साथ में किया काम

आपको बता दें कि हिमेश रेशमिया ने इमरान हाशमी की फिल्म आशिक बनाया आपने और अक्सर में काम किया है। हिमेश ने इमरान हाशमी के कई गानों को आवाज दी है जो हिट रहे हैं। इसमें झलक दिखला जा, आशिक बनाया आपने और आपकी कशिश जैसे गाने शामिल हैं।

18 साल बाद साथ काम करेंगे

2019 में रिलीज हुई इमरान की फिल्म द बॉडी में हिमेश का एक गाना था। वहीं 2007 में उन्होंने इमरान की फिल्म गुड बॉय बैड बॉय में बतौर म्यूजिक डायरेक्टर काम किया था। कह सकते हैं कि अब वे 18 साल बाद इमरान हाशमी की किसी फिल्म को म्यूजिक देंगे।

एक्टिंग का पेशा काफी डिमांडिंग है, आपको इंडस्ट्री के हिसाब से काम करना पड़ेगा

शरद केलकर उन फेमस एक्टर्स में से हैं, जो फिल्मों, ओटीटी और छोटे पर्दे तीनों पर पसंद किए गए हैं। बाहुबली में प्रभास की आवाज बनकर शोहरत बटोरने वाले शरद ने एक बार फिर छोटे पर्दे का रुख किया है, नए सीरियल तुम से तुम तक से। उनसे एक खास बातचीत।

एक समय था, जब आप हकलाया करते थे और वहां से लेकर आवाज की दुनिया का इतना बड़ा बनने का सफर कैसा था? इंडस्ट्री में आवाज के मामले में आप और अमिताभ बच्चन को ही मानक माना जाता है।

शाहरुख खान की फिल्म का डायलॉग है न कि किसी चीज को आप शिद्दत से चाहो, तो सारी कायनात उसमें लग जाती है, मगर मेरे लिए तो ये मरता क्या न करता वाली हालत थी। मैं तो पढ़ाई - लिखाई करके अच्छी-खासी नौकरी कर रहा था कि मुझे एक्टिंग के कीड़े ने काटा और मैं यहां आ गया, पर जब मैं यहां आया, तो मेरी उम्र अच्छी-खासी 28 साल की थी। मैं अपना ग्लोरी पीरियड खो चुका था। मुझे किसी भी हाल में इस क्षेत्र में पैर जमाने थे। चूंकि मैं दिखता अच्छा था, तो मुझे काम तो मिलता था, मगर मेरा काफी मजाक उड़ता था।

एक्ट्रेस कीर्ति से आपकी शादी को 20 साल हो गए, मगर एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री जिसे काजल की कोठरी कहा जाता है, उसमें आप दाग से बचे रहे, कभी आपका नाम किसी से नहीं जुड़ा?

ये जो नजरिया है न, ये आज की तारीख में पूरी तरह से गलत है। आज की डेट में सबसे सफेद कोठरी यही है। मुझे अगर किसी अच्छे दोस्त के साथ कॉफी पीने भी जाना हो, तो दस बार सोचना पड़ता है कि वहां मुझे देखकर पैप्स या मीडिया क्या दिखा दे या छाप दे पता नहीं। तो आज हमारी इंडस्ट्री में आप ऐसा-वैसा कुछ नहीं कर सकते। आज जो दूसरी इंडस्ट्री में हो रहा है, उसका पांच पर्सेंट भी हमारे यहां नहीं हो रहा। आप चाहे मेडिकल जगत देखें या कॉर्पोरेट वर्ल्ड, रिश्तों का करप्शन वहां हमारी इंडस्ट्री की तुलना में कहीं ज्यादा है। मेरे बहुत दोस्त हैं, जो बताते रहते हैं कि उनके कार्यक्षेत्र में क्या-क्या हो रहा है? असल में आज लोग बहुत ही फ्रस्ट्रेटेड हैं। काम के घंटे बढ़ गए हैं। तनाव बहुत ज्यादा है। इस स्ट्रेसफुल लाइफ में डिवोर्स बढ़ रहे हैं। एक्स्ट्रामेरिटल अफेयर्स हो रहे हैं, मर्डर्स तक हो रहे हैं।

आप एक ऐसे अदाकार हैं, जो एक ही समय में फिल्म, ओटीटी और टीवी पर काम कर रहे हैं, आप 8 घंटे की शिफ्ट के बारे में क्या सोचते हैं?

आप जिस फील्ड में हैं, उसे आपने चुना है, तो आप हर जॉब के प्रोज और कॉन्स जानते हैं। आपसे किसी ने जबरदस्ती नहीं की है। हमारा पेशा काफी डिमांडिंग है, तो आपको टाइम देना पड़ेगा कि ये 7 दिन आ रहा है या 5 दिन। आपको पता है कि आप मुंबई जैसे शहर में हैं, जहां आपको शूटिंग में पहुंचने के लिए ट्रैफिक का सामना करना पड़ता है और टाइम लग जाता है। आपको अपनी इंडस्ट्री के हिसाब-किताब से काम करना पड़ेगा। एक बार आप किसी मुकाम पर पहुंच जाएं, तो फिर आप अपने काम का पैमाना सेट कर सकते हैं। मगर ये प्रोफेशन है डिमांडिंग इसमें आप शिकायत कैसे कर सकते हैं।

फिल्मों और ओटीटी पर सक्रिय रहते हुए आपने लंबे समय बाद टीवी पर वापसी की। कोई खास वजह?

मैं टीवी से गायब नहीं था। पिछला शो बैरी पिया (2010) था। मैं कमिटमेंट को लेकर बहुत सीरियस हूं और ओवर कमिटमेंट से बचता हूं। तभी किसी प्रोजेक्ट के लिए हां कहता हूं, जब उसे निभा सकूं। बैरी पिया के बाद टीवी के कई ऑफर थे, लेकिन फिल्में भी करनी थीं, इसलिए डेट्स को लेकर चुनना पड़ा। राजन शाही ने जब कुछ तो लोग कहेंगे ऑफर किया, तो वो हफ्ते में चार दिन आने वाला शो था। राजन जी तेज काम करते हैं और मैं भी। मैं उन एक्टर्स में से नहीं जो कॉस्ट्यूम बदलने में वक्त लें, मैं सेट पर ही कपड़े बदल लेता हूं। सोचता हूं, अगर बच्चन साहब ऐसा कर सकते हैं, तो मैं क्यों नहीं? टीवी पर मैंने सात फेरे, आदर्श दामाद, आदर्श बेटा, बैरी पिया जैसे रोल किए। एक वक्त के बाद उन्हीं जैसे किरदारों के ऑफर आने लगे। कुछ तो लोग कहेंगे में मच्योर लव स्टोरी की, फिर वैसे ही रोल आने लगे। एजेंट राघव किया तो पुलिस वाले रोल्स की भरमार हो गई। कोई लौट के आया में ब्लाइंड विलेन था, जिसे काफी सराहा गया।

आपका शो एज गैप वाली लव स्टोरी पर आधारित है, मगर आज प्यार-मोहब्बत के मामले में सिचुएशनशिप, घोस्टिंग, ब्रेड्क्रबिंग जैसे टर्म्स आ गए हैं, क्या कहना चाहेंगे इस पर?

अरे हां, मैंने तो पॉकेटिंग के बारे में भी सुना है। सिचुएशनशिप तो बहुत सुनता हूं। आखिरकार ये बला है क्या? मैं अभी इस लीग में आया नहीं हूं, क्योंकि मेरी बेटी अभी 10-11 साल की है। मैं पूछूंगा निहारिका (सीरियल की उनकी हीरोइन निहारिका चौकसे) से। अब मैं यही कहूंगा कि हमारे समय में टर्म्स नहीं थे, मगर ये चीजें तो तब भी थीं। डबल डेटिंग तो तब भी लोग करते ही थे। अब जहां तक प्यार की बात, तो इसे शब्दों में बयान कैसे करें, मगर इतना जरूर कह सकता हूं कि मेरे लिए प्यार का मतलब है खुशी।

गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी वर्ष संदेश यात्रा का सांसद ने किया स्वागत

नोएडा (चेतना मंच)। सरदार परविंदर सिंह और दिल्ली गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के नेतृत्व में तिलक एवं जनेऊ की रक्षा के लिए बलिदान देने वाले साहिब श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज के 350वें शहीदी वर्ष को समर्पित संदेश यात्रा 12 जुलाई को लखनऊ से शुरू होकर उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से होती हुई नोएडा के सेक्टर-18 गुरूद्वारा पहुंची। जहां पर सांसद डॉ. महेश शर्मा व गुरूद्वारे के प्रबंधन द्वारा स्वागत किया गया।

इस मौके पर परविंदर सिंह लखनऊ, रमिंदर सिंह रिंकू कानपुर, मंदीप सिंह वालिया बहराइच, बलदेव सिंह बैंड शहजादपुर, कमलजीत सिंह पीलीभीत, अवतार सिंह छाबड़ा, गुरमीत सिंह शाजहांपुर, बॉबी संधू, मनमोहन सिंह पोपली, बंटी ग्रोवर आगरा, तथा मनिंदर सिंह, संजय बाली, रणधीर सिंह, भूपिंदर सिंह, डिम्पल आनंद, हरजीत सिंह, परमजीत सिंह, सरबजीत सिंह आदि लोग मौजूद थे।

उद्यमी शिखर सम्मेलन 15 को भारत मंडपम में : मीतू पुरी

नोएडा (चेतना मंच)। अंतरराष्ट्रीय युवा कौशल दिवस के अवसर पर दिल्ली स्थित भारत मंडपम में 15 जुलाई को युवा उद्यमी शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। शिखर सम्मेलन का आयोजन कर रही कांफ्रेंडरेशन आफ वूमंस एंटरप्रेन्योर्स आफ इंडिया (भारतीय महिला उद्यमी परिसंघ)।

सेक्टर-29 स्थित नोएडा मीडिया क्लब में एक प्रेसवार्ता के दौरान कांफ्रेंडरेशन की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मीतू पुरी ने बताया कि सम्मेलन में स्टार्टअप चला रहे युवाओं को अपने स्टार्टअप को प्रदर्शित करने और उद्योग जगत के बड़ी हस्तियां और नीति निर्माता से सीधे जुड़ने का एक गतिशील मंच प्राप्त हो सकेगा।

उन्होंने बताया कि इस शिखर सम्मेलन में मुख्य अतिथि के तौर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता उपस्थिति रहेंगी,जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन 'विकसित भारत-2047' की आधारशिला के रूप में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए सरकार की नीतियों और योजनाओं पर के बारे में बताएंगी।

कांफ्रेंडरेशन की उत्तर प्रदेश अध्यक्ष रिया रहेजा ने जानकारी देते हुए बताया कि इस शिखर सम्मेलन में आईआईटी मद्रास,आईआईटी दिल्ली,एमिटी विश्वविद्यालय,मारवाह स्कूल समेत अन्य प्रमुख कॉलेज के युवा अपने स्टार्टअप का प्रदर्शन करेंगे।

साथ ही मूवर्स एंड पैकर्स के अध्यक्ष रमेश अग्रवाल उ मारुति सुजुकी के राहुल भारती एमएसएमई मंत्रालय की सुश्री मर्सी वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में स्टार्टअप इंडिया की प्रमुख सुश्री ममता वेंकटेश, ,ओरियन के दुष्यंत सिंह अपनी विशेषज्ञता और उद्यमिता के दृष्टिकोण से उपस्थित लोगों को प्रेरित करेंगे। कांफ्रेंडरेशन की यूथ अध्यक्ष परिधि रहेजा ने कहा इस शिखर सम्मेलन में स्टार्टअप पिच, पैनल चर्चा और नेटवर्किंग सत्र शामिल होंगे,जो युवा उद्यमियों, निवेशकों और नीति निर्माताओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देंगे।

ग्राहक जागरूकता अभियान चलाया

नोएडा (चेतना मंच)। भारतीय मानक ब्यूरो नोएडा शाखा द्वारा आज सेंचुरी अपार्टमेंट सेक्टर-100 में निवासियों की जागरूकताके लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

आरडब्ल्यूए अध्यक्ष पवन यादव ने बताया कि भारतीय मानक ब्यौरा, नोएडा शाखा से बर्षा छाबरिया ने लोगो बताया कि किस तरह हम कोई सामन खरीदते है हम छोटी लापरवाही करते है कि उसमें भारतीय मानक ब्यूरो का चिन्ह बिना देखे सस्ते के चक्कर में खरीद लेते है जो हमारे लिए सिर्फ आर्थिक हानि ही नहीं है शारीरिक रूप से भी जानलेवा हो जाते है। इसलिए हम सभी को अपने जागरूक होना है कि जो सामन हम खरीद रहे है वह सही है या नहीं ये जिम्मेदारी हमारी है। भारत सरकार द्वारा समय 2 पर जागरूकता अभियान का आयोजन किया जाता है ताकि लोग नकली सामन से बच सकें। नोएडा शाखा की टीम द्वारा एक नुक्कड़ नाटक द्वारा उपस्थिति लोगो को नाटक के माध्यम से जागरूक किया गया। एडी जोशी ने बताया कि हम भी आजतक बिना चिन्ह देखे ही खरीद लेते थे, आज के बार हम बिना भारतीय मानक ब्यूरो के निशान के नहीं खरीदें।

शेषनाथ गौतम, राजेंद्र गोयल, कर्मजीत सिंह, रामकुमार चौहान, उम्मेद सिंह पवार, नवीन, सुमित, भारत भूषण, गोपाल शर्मा, प्रशांत शर्मा आदि उपस्थित रहे।

एथलेटिक्स, क्रिकेट व बॉक्सिंग की प्रतियोगिता आयोजित

नोएडा (चेतना मंच)। खेल निदेशालय उत्तर प्रदेश लखनऊ एवं डीएम मनीष कुमार वर्मा के निर्देशों के क्रम में मलकपुर स्पोर्ट्स स्टेडियम ग्रेटर नोएडा में जनपद स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका महासचिव बॉक्सिंग एसोसिएशन उत्तर प्रदेश/जिला सचिव ओलंपिक एसोसिएशन प्रमोद कुमार द्वारा विधिवत रूप से शुभारंभ किया गया। बॉक्सिंग प्रतियोगिता की नोडल ज्योति नागर, एथलेटिक्स प्रतियोगिता के नोडल शीलांकुर तथा क्रिकेट प्रतियोगिता के परवेज अली द्वारा पर्यवेक्षक किया गया।

वरिष्ठ कोच गौतमबुद्धनगर परवेज अली ने बताया कि क्रिकेट प्रतियोगिता में से बालाजी चैंपियंस द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त किया गया, डिस्कस थ्रो बालिका वर्ग में अनिका ने प्रथम स्थान, बबीता ने द्वितीय स्थान तथा आरोही ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डिस्कस थ्रो बालक वर्ग में सत्यम ने प्रथम स्थान, दिव्यांश ने द्वितीय स्थान तथा नीरज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 800 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में साक्षी ने प्रथम स्थान, अविका ने द्वितीय स्थान तथा स्नेहा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 800 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में बालक वर्ग में अमन ने प्रथम स्थान, गगन ने द्वितीय स्थान तथा अरुण ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हाई जंप प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में अन्नया ने प्रथम स्थान, अद्विका ने द्वितीय स्थान तथा ईशा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हाई जंप बालक वर्ग में सत्यम ने प्रथम स्थान, दिव्यांशु ने द्वितीय स्थान तथा नीरज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि 1500 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में दिया ने प्रथम स्थान, दिशा ने द्वितीय स्थान तथा मीरा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 1500 मीटर बालक वर्ग में सम्राट ने प्रथम स्थान, राजनीतिक स्थान तथा विशाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार ट्रिपल जंप प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में आशी ने प्रथम स्थान, अदिति ने द्वितीय स्थान तथा अवनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया एवं ट्रिपल जंप प्रतियोगिता बालक वर्ग में मान ने प्रथम स्थान, मोहित ने द्वितीय स्थान तथा नीर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

शहीद व महापुरूष के नाम रखा जाए कांग्रेस के मंडल का नाम : नरेश भाटी

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा में कांग्रेस द्वारा ब्लॉक स्तर पर संगठन सृजन अभियान के तहत नॉर्थ ब्लॉक के अध्यक्ष राहुल पांडेय के नेतृत्व में सेक्टर-12 में बैठक का आयोजन किया गया।

प्रभारी नरेश भाटी ने बताया कि अब प्रत्येक मंडल का नाम संबंधित क्षेत्र के किसी महापुरुष या शहीद के नाम पर रखा जाएगा, जिससे संगठन को सामाजिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक मजबूती मिल सके। महानगर अध्यक्ष मुकेश यादव ने बताया कि बैठकों का उद्देश्य कांग्रेस संगठन को जमीनी स्तर तक सक्रिय करते हुए पंचायत से लेकर जिला स्तर तक मजबूती प्रदान करना है। ब्लॉक नार्थ में हुई बैठक का संचालन यतेंद्र शर्मा ने किया। इस अवसर पर कई वरिष्ठ पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इस अवसर पर लियाकत चौधरी, दयाशंकरपांडेय, एस.एस.सिसोदिया, सुल्तान बिधूड़ी, कैप्टन पीएस रावत, राजकुमार, सुमन राय, मधुसूदन, गोपाल रावत, दिनेश सिंह, वासुन, ललित, हरकेश, रविप्रकाश, गौरव, श्रीवर्धन, भगवती प्रसाद, ललित राव, जितेन्द्र लोधी, सुरेंद्र रावत, सुशील कुमार, प्रशांत मिश्रा, वी एन गोस्वामी सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

'नो हेलमेट, नो पेट्रोल' सिर्फ कागजों पर चल रहा अभियान!

नोएडा में पेट्रोल पंपों पर उड़ रही आदेशों की धज्जियां, सड़क सुरक्षा खतरे में

नोएडा (चेतना मंच)। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा को लेकर शुरू किया गया 'नो हेलमेट, नो पेट्रोल' अभियान अब सिर्फ पोस्टरों और बोर्डों तक सिमट गया है। शुरुआत में भले ही इस अभियान को लेकर सख्ती दिखाई गई थी, लेकिन कुछ ही हफ्तों में प्रशासन की निगरानी कमजोर पड़ गई, और अब स्थिति यह है कि नोएडा के अधिकतर पेट्रोल पंपों पर बिना हेलमेट के दोपहिया चालकों को बेझिझक पेट्रोल दिया जा रहा है।पेट्रोल पंप संचालकों पर न कोई दबाव है और न ही प्रशासन की ओर से नियमित जांच की कोई व्यवस्था। परिणामस्वरूप, चालक खुलेआम नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं और नियमों की धज्जियां उड़ रही हैं।यह लापरवाही सड़क सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन चुकी है।

बिना हेलमेट के मौत का आँकड़ा डरावना

2023 में भारत में सड़क दुर्घटनाओं में हुई मौतों में करीब 20 फीसदी मौतें सिर्फ हेलमेट न पहनने की वजह से हुईं।2024 में उत्तर प्रदेश में यह आंकड़ा 31 फीसदी तक पहुँच गया।2025 के जनवरी से मई के बीच राज्य में हुई 7,700 सड़क दुर्घटना मौतों में से लगभग 2,387 मौतें हेलमेट न पहनने के कारण हुईं।यदि यही रफ्तार रही, तो वर्ष के अंत तक 8,000 से अधिक जानें सिर्फ हेलमेट न पहनने की वजह से जा सकती हैं।

सिर्फ पोस्टर, ज़मीनी कार्रवाई नदारद

"शहर के कई पेट्रोल पंपों पर 'नो हेलमेट, नो पेट्रोल' के साइन बोर्ड लगे तो हैं, लेकिन इनका पालन नहीं किया जा रहा। ना तो कर्मचारियों को नियमों के पालन की कोई सख्त हिदायत दी गई है, और ना ही जिला प्रशासन इस मुद्दे पर गंभीर दिख रहा है।

प्रशासन की चुप्पी पर उठ रहे सवाल

"इस पूरे मामले में सबसे चिंताजनक बात यह है कि प्रशासन की ओर से अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। न तो पेट्रोल पंपों पर छापेमारी की जा रही है और न ही किसी प्रकार की जुर्माना कार्रवाई सामने आई है। इससे साफ है कि यह अभियान अब सिर्फ एक दिखावा बनकर रह गया है।

विशेषज्ञों की राय

सड़क सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि यदि नियमों का पालन कड़ाई से हो, तो हेलमेट पहनने की दर बढ़ सकती है और हजारों जानें बचाई जा सकती हैं। लेकिन इसके लिए नीतियों के साथ-साथ उनके क्रियान्वयन में भी इच्छाशक्ति जरूरी है।

सेक्टर-20 में श्री शिव महापुराण कथा जारी

नोएडा (चेतना मंच)। श्री हनुमान मंदिर, सेक्टर-20 नोएडा में श्री शिव महापुराण कथा के प्रथम दिवस पर कथा वाचिका कनकलता 'कनक' ने भगवान शिव जी के महात्म को बताते हुए कहा कि हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जैसे भोले बाबा की सर पर जटाओं के जंजाल को देखो और इसे समझो कि इसे खोलो मत बांधकर रखो। हमें किसी के सामने अपनी बात कहनी नहीं है। सांप का मुकुट बताता है कि विषैले लोगों को भी धारण करो, कानों को कड़वी-कड़वी बातें सुनने की आदत डालो।

शिव जी कहते हैं कि कटी पर वस्त्र संयम का होना चाहिए। वक्र चंद्रमा यानी कि टेढ़े-मेढ़े भी मेरे सिर पर आ जाओ, जटाओं से भक्ति की सुंदर गंगा बह रही है यानी कि सभी को एक समान देखना चाहिए। उपवीत भुजंगा हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि काल मेरे साथ है त्रिपुंड कर्म ज्ञान और भक्त की रेखा है नंदी धर्म की सवारी है क्योंकि भगवान भोलेनाथ वैल की सवारी करते हैं जनेऊ नाग का डालते हैं यानी कि काल को हमेशा याद रखना चाहिए। कथा में नोएडा की पूर्व विधायिका श्रीमति विमला बाथम वैश्य ने भगवान भोले बाबा का पूजन कर आशीवार्द लिया और संस्था को अपने आशीर्वचन दिए।

इस अवसर पर संस्था के संरक्षक राधा कृष्ण गर्ग, अध्यक्ष सुधीर पोरवाल, अति विशिष्ट ओपी गोयल, टी एन गोविल, पंकज गोयल, लवकेश गोयल, अमित अग्रवाल, रवि पोरवाल, डॉ शैलेंद्र पोरवाल, नवीन पोरवाल, संदीप पोरवाल, ईश्वर चंद्र पोरवाल, हर्षल पोरवाल, सुनील मास्टर, राहुल, हरिओम, रविन्द्र पाठक,सीमा गोयल, कुसुम चौधरी, नेहा पोरवाल, विनय गुप्ता, सीमा पोरवाल, सुमन पोरवाल, रूवी गुप्ता, ज्योति पोरवाल, माधुरी पोरवाल, मोहिनी पोरवाल, इंदू यादव आदि माताओं-बहिनों भईयों ने अमृत कथा का श्रवण किया।